SYLLABUS

Class – B.B.A. I Sem.

Subject – हिन्दी

	हिन्दी भाषा का स्वरूप – 1. हिन्दी साहित्य का इतिहास 2. मानक भाषा, अमानक भाषा निबंध – 3. मित्रता (रामचन्द्र शुक्ल) 4. अध्ययन (मिश्रबन्धु) 5. उद्देश्य और लक्ष्य (रामचन्द्र वर्मा) कविता – 6. हिमालय के प्रति (रामधारी सिंह दिनकर)7. मोचीराम (धुमिल) उपन्यास – 8. कर्मभूमि (प्रेमचन्द) 9. आनन्दमठ (बंकिमचन्द चटोपाध्याय) 10. राम दरबारी (श्रीलाल शुक्ल) व्याकरण – 11. संक्षेप 12. पल्लवन या विस्तारण 13. समाचार लेखन 14. समास, संधि पत्र लेखन एवं संक्षेपिका – 15. अलंकार, 16. छनद 17. शब्द एवं वाक्य रचना प्रकार 18. अशुद्धि संशोधन 19. शैली एवं प्रकार 20. व्यावसायिक पत्र लेखन।

renaissance
renaissance
renaissance

हिन्दी भाषा का स्वरूप

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास

कालक्रम से उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर हिन्दी साहित्य का श्रीगणे"ा ईसा की दसवीं शताब्दी से हुआ मिलता है। इसमें यदि हिन्दी भाषा के प्रारम्भिक रूप अपभ्रं"ा को भी जोड लें तो यह काल छटी सातवीं शताब्दी तक जा पहुँचता है। इतना पुरातन और निरन्तर विकास"ाील रहने वाला भी हिन्दी साहित्य गत डेढ सहस्र वर्षों में समय के साथ बढता ही गया। दूसरी और यह बात भी ऐदम सच है कि प्रारम्भ के लगभग एक हजार वषों तक हिन्दी में साहित्य का इतिहास जैसी चीज का एक दम अभाव रहा। है।

1. प्रारम्भिक प्रयास – हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन को प्रारम्भ करने का श्रेय है – प्रसिद्ध फच विद्वान प्रोफेसर गार्साद तांसी को जिन्होंने सन् 1939 ई. में इस्तावर दललतरेत्थुर ऐंदुई ए हिन्दुस्तानी की रचना की। इसकों सर्वप्रथम प्रका"ित किया था – ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैड़ की ओरियंटल ट्रांसले"ान कमेटी ने। फ्रेंच भाषा में रचित इसके प्रथम संस्करण के दो भाग थे और द्वितीय के तीन भाग। सन् 1938 में दिल्ली के मौलवों करीमुद्दीन ने इसकों तवफानुम"ाुअस के नाम से परिवर्तित परिवर्धित करके, प्रका"ित कराया। उर्दू में इसे तजाकिरा (जिक्र) कहा गया तो अंग्रेजी में हिस्ट्री।
   फिर भी इस प्रथम प्रयास को मार्ग प्रद"ार्क अव"यक माना जायेगा।
2. श्रेष्ठ प्रयास – जनवरी सन् 1029 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रका"ित हुआ। वास्तव में हिन्दी में लिख ग्रन्थ को सच्चे और पूर्ण अर्थों में साहित्य का इतिहास कहा जा सकता है। वह यह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में सबसे पहली बार आदिकाल से लेकर छायावादी रहस्यवादी युग तक कह विभिन्न स्त्रोंतों से प्राप्त सामग्री सुनियोजित एवं संविचारित काल विभाजन के आधार पर और साहित्यिक ढंग से उपस्थित की गई मिलती है। यह इतिहास साहित्य की परिभाषा के साथ आरम्भ होता है –जबकि प्रत्येक दे"ा का साहित्य वहां की जनता की चितवृत्ति का सचित्र प्रतिबिम्ब होता है तब यह नि"चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन हेाता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चितवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहितय परम्परा के साथ उसका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। इस परिभाषा से ही इस बात का संकेत मिल जाता है कि उनके इतिहास में काल क्रम के आधार पर कविवृत्त संग्रह वरन् तत्कालीन सामाजिक परिपा"र्व में कवियों के कवित्व पर और कृतित्व के साथ ही कवियों के कर्तत्व पर भी विचार किया गया है।

   निःसंदेह अपनी इन्ही वि"ोषताओं के कारण यह इतिहाय अधिकाधिक अर्थों में साहित्य का इतिहास प्रतीत होता है। प्रमाण अपनी दो प्रवृत्तियों के कारण साहित्य का उनका इतिहास अधिकाधिक अर्थों में साहित्य का इतिहास प्रतीत होता है। यह कहना भी अप्रासंगिक नही की कम स कम हिन्दी के लिए इस प्रकार का प्रयत्न अपने में यह ग्रन्थ आद"ार्ा रूप में ग्रहण किया जाता है काल विभाजन की कसौटी पर विचार करते समय भी आचार्य शुक्ल ने दो तथ्यों पर वि"ोष बल दिया है।
   1. जिस कालखण्ड के भीतर किसी वि"ोष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पडे उसे एक अलग काल माना जा सकता है और उसका नामकरण उन्हीं रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया जा सकता है।
   2. किसी काल के भीतर जिस एक ही ढंग के बहुत अधिक ग्रन्थ प्रसिद्ध चले आते है उस ढंग की रचना उस काल के लक्षण के अन्तर्गत मानी जायेगी अर्थात प्रसिद्धि भी किसी काल की लोकप्रवृत्ति की प्रतिध्वनि हुआ करती है। यही कारण कि यद्यपि आचार्य शुक्ल ने (डॉ.

नामवरसिंह के "ाब्दों में कवियों के नाम से पहले कम संख्या देने का ढंग भी वही मिश्रबंधु विनोद वाला प्रचीन ढंग) रहने दिया, परन्तु प्रवुत्ति साम्य और युग के अनुसार कवियों को समुदायों मे रखकर उन्होने सामूहिक अं"ाों मे स्वतः ही युक्तिसंगत प्रतीत होने लगता है।

3. **अन्य प्रयास** – शुक्लजी के प"चात अधिका"ातः उन्हीं के अनुकरण पर, हिन्दी साहित्य के अनेक इतिहास ग्रन्थ रचे गये। प्रमुख ग्रन्थ और ग्रन्थकार है –
   1. हिन्दी भाषा और साहित्य श्यामसुन्दर दास – संवत 1987 में इलाहबाद के प्रका"ाित लगभग 500 पृष्ठों के ग्रन्थ में साहित्य की वि"ाष्ट धाराओं का विस्तृत निरूपण किया गया है।
   2. हिन्दी साहित्य का विवेचानात्मक इतिहास – डॉ. सूर्यकान्त शास्त्री प्रका"ा वर्ष संवत 1987। प्रमुख वि"ोषता – कवियों का तुलनात्मक अध्ययन।
   3. हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास – हरिऔध। मूलतः पटना वि"वविद्यालय में दिया गया विस्तृत भाषण बाद में पुस्तककार में प्रका"ाित।
   4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. रमा"ांकर शुक्ल रसाल। संवत 1988 में प्रका"ाित हिन्दी के सभी इतिहास ग्रन्थों में बडा।
   5. साहित्य की झॉकी – प्रो. सत्येन्द्र। संवत 1993 में प्रका"ाित निबन्धात्मक शैली।
   6. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. राजकुमार वर्मा। पहले दो कालों तक सीमित।
   7. हिन्दी साहित्य – उद्भव और विकास, हिन्दी साहित्य की भूमिका तथा हिन्दी साहित्य का आदिकाल हजारी द्विवेदी।
   8. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त
   9. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – डॉ. देवी"ारण रस्तोगी।
   10. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – (सं) डॉ. नगेन्द्र।

2. मानक भाषा, अमानक भाषा

मानक भाषा–

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य हैं कि वह बोले एवं लिखे। किंतु हिन्दी के अनेक रूप प्रचलित है जैसे - गुजरात में गुजराती हिन्दी, उत्तरप्रदेश में खड़ी बोली हिन्दी, बुंदेलखण्ड में बघैली हिन्दी बोली जाती है। जब कोई अहिन्दी भाषी व्यक्ति बोलना व लिखना सीखे तो कौन-सी भाषा को सीखे। इसलिए एक ऐसी भाषा बनाई गई जो राष्ट्र की एकता को बनाए रखे। वह भाषा थी 'मानक भाषा'।

परिभाषा - भाषा का सर्वमान्य, सर्वस्वीकृत एवं सर्वप्रतिष्ठित रूप ही मानक हिन्दी है।

यह भाषा एक निश्चित मानदंड या नाप के आधार पर तौली हुई भाषा हैं जो पूर्णतः अशुद्धियों से मुक्त है। मानक भाषा का शब्दकोष सन् 1948-50 में बनकर तैयार हुआ।

इस भाषा को 'नागर' 'टकसाली' 'साधु' भाषा भी कहते है। यह सभ्रांत (पढ़े-लिखे) लोगों के प्रयोग में लाई जाती है। इस भाषा को अंग्रेजी में स्टेन्डर्ड लैंग्वेज कहा जाता है। इसके निम्नलिखित विशेषताएँ है -

1. यह भाषा अशुद्धियों से मुक्त है।
2. इसका स्वतंत्र व्याकरण है।
3. इस भाषा का विपुल साहित्य भण्डार है।
4. इसका शब्दकोष वृहद (बहुत बड़ा) है।
5. यह भाषा अनेक औपचारिक अवसरों पर प्रयोग में लाई जाती है।
6. यह अनुसंधान कार्यों में प्रयोग में लाई जाती है।
7. इस भाषा का प्रयोग सरकारी कार्यालयों में किया जाता है।
8. यह संविधान में अधिकृत भाषा है।

9. यह देश की सांस्कृतिक एकता को बनाए रखती है।
10. प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति औपचारिक अवसरों पर इस भाषा का प्रयोग करते है।

मानक भाषा के तत्व - मानक भाषा के चार तत्व होते है।

1. **ऐतिहासिकता** - मानक भाषा स्वतंत्र इतिहास हैं जो मेरठ के आस-पास बोली जाने वाली खड़ी बोली से होता है। खड़ी बोली जो मेरठ की एक सामान्य बोली थी, अपने क्षेत्र का विस्तार करती हुई दिल्ली व आगरा के क्षेत्रों में बोली जाने लगी। धीरे-धीरे यह पूरे उत्तरप्रदेश की भाषा बन गई। समय के साथ यह भाषा पूरे हिन्दुस्तान में बोली व समझी जाने लगी। यह भाषा स्वतंत्रता आन्दोलन की मुख्य भाषा रही। देश के आजाद होते ही यह पॉच प्रान्तों में बोली व समझी जाने लगी। अब तक यह पूर्ण भाषा बन चुकी थी। स्वतंत्रता के साथ ही इसे राष्ट्रीय भाषा घोषित कर दिया गया।
2. **जीवन्तता** - यह भाषा एक जीवन्त भाषा है। जो समय के अनुसार अपने आप को परिवर्तित कर लेती है। वह एक नदी के जल के समान है। जिस तरह जल उपर से नीचे (ढलान) की ओर बहता है, उसी तरह भाषा भी कठिनता से सरलता की ओर बढ़ती है। अतः कहा जा सकता हैं कि मानक भाषा जीवन्त भाषा है।
3. **स्वायत्ता** - मानक भाषा स्वायत (स्वतंत्र) भाषा है। जो किसी अन्य भाषा पर आधारित नहीं है। इस भाषा में केवल हिन्दी के ही शब्द प्रयोग में लाए जाते है। इसकी अपनी स्वतंत्र लिपि है। इसका स्वतंत्र शब्दकोष एवं साहित्यकोष है।
4. **मानकीकरण** -मानकीकरण एक प्रक्रिया का नाम हैं जो साधारण शब्द को मानक बनाती हैं जो शब्द बोल-चाल की भाषा में अधिक घिस जाते हैं, उन्हें व्याकरण के नियमों के आधार पर तौला जाता हैं और उन्हें मानक भाषा में सम्मिलित कर लिया जाता है। ऐसी प्रक्रिया को मानकीकरण कहते है।

मानक हिन्दी की शैलियॉं - मानक भाषा की तीन शैलियॉं है।

1. **हिन्दी** - हिन्दी का प्रयोग संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के रूप में किया जाता है। यह मानक भाषा की एक शैली जिसमें संस्कृत के शुद्ध शब्दों को रखा जाता है। अर्थात् इस शैली में तत्सम शब्दों का प्रयोग किया जाता है। साहित्य एवं धार्मिक पुस्तकों में इसी शैली का प्रयोग कर भाषा को लिखा जाता है।

   उदाहरण - वर दे वीणा वादीनी वर दे
   प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव
   भारत में भर दे

   अथवा

   राष्ट्रगीत वंदे मातरम्

2. **उर्दू** - उर्दू का अर्थ हैं डेरा। मुगलों के समय में उर्दू सैनिकों के रहने के स्थान को कहा जाता था। इन लोगों की भाषा को आगे चल कर उर्दू नाम दिया गया क्योंकि अरबी-फारसी भाषा का खड़ी बोली के साथ मिला-जुला प्रयोग किया जाता था। इस शैली को उर्दू कहा गया है।

   उदाहरण - सारे जहॉं से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा
   हम बुल-बुलें हैं इसकी
   ये गुलिस्तां हमारा।

3. **हिन्दुस्तानी** - इस शैली में खड़ी बोली के साथ उर्दू तथा संस्कृत के तत्भव शब्दों का प्रयोग किया गया। यह शैली हिन्दू और मुसलमानों की भाषा को जोड़ने वाली कड़ी साबित हुई।

   उदाहरण - गीत बेचता हूँ

जी हॉ, मैं गीत बेचता हूँ,
तरह-तरह के किस्म-किस्म के गीत बेचता हूँ।

मानक, अमानक और उपमानक में अन्तर –

क्र.	मानक	अमानक	उपमानक
1	मानक भाषा व्याकरण सम्मत होती है।	अमानक भाषा का कोई व्याकरण नहीं है।	उपमानक भाषा में व्याकरणीय नियमों में शिथिलता होती है।
2	इस भाषा का प्रयोग शिष्ट समाज द्वारा किया जाता है।	इस भाषा का प्रयोग प्रायः (अकसर) नहीं किया जाता है।	यह सामान्य व्यवहार में प्रयोग में लाई जाती है।
3	यह भाषा अशुद्धियों से मुक्त होती है।	यह पूरी भाषा अशुद्ध होती है।	इस भाषा में सामान्य अशुद्धियों को नजर-अंदाज (अनदेखा) किया जा सकता है।
4	इस भाषा का प्रयोग औपचारिक अवसरों पर किया जाता है।	यह अनपढ़ या अज्ञानी व्यक्ति द्वारा बोली जाती है।	इस भाषा का प्रयोग एक बहुत बड़ा वर्ग करता है।
5	मानक भाषा पूर्णतः शुद्ध होती है।	यह भाषा पूर्णतः अशुद्ध होती है।	यह कुछ कुछ शुद्ध होती है।
6	इसका प्रयोग पाठ्यपुस्तकों में किया जाता है।	इसका प्रयोग नहीं किया जाता।	इसका प्रयोग बोलचाल में किया जाता है।
7	मानक भाषा सम्माननीय भाषा है।	इसका कोई रूप नहीं है।	इसे सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता।

निबंध

3. मित्रता– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

सारांश

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस निबन्ध में मित्र चयन, उनकी उपयोगिता, मित्रों का प्रभाव उनके गुण अवगुण इत्यादि का चित्रण किया है। मित्र किसे बनायें, कैसे बनायें, सच्चा मित्र कौन हैं और अहितकारी मित्र कौन है इसकी परख इत्यादि का विवेचन है। शुक्लजी के अनुसार युवा के घर से बाहर निकलते ही अनेक लोगों से परिचय होता है एवं कई उसके मित्र बन जाते हैं– मित्रों के चुनाव पर जीवन की सफलता निर्भर है क्योंकि संगत का प्रभाव आचरण पर पड़ता है। कि"ोर कच्ची मिट्टी की तरह होता है एवं मित्रों पर परिस्थितियों से वह मिट्टी मूर्ति में ढलतो है– वह राक्षस या देवता बन जाता है। मित्र बनाने में हम विवेक से काम नहीं लेते–मित्र बनाने के पूर्व उसके गुण–दोषों को नहीं परखते। वाचाल चतुर एवं हाव भाव वाला हमारा मित्र बन जाता है। हम मित्रता का उद्दे"य जाने बिना उसे मित्र बना लेते है। मित्रता का धर्म हैकि उत्तम विचारों से हमें दृढ़ करते हुए हमारे विकारों को दूर करेंगे, सच्ची राह दिखाएँगे, हमारे चरित्र का विकास करेंगे। यदि वि"वासघात हुआ तो मनुष्य

टूट जाता है। सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की सी निपुणता, अच्छी माता का धैर्य एवं कोमलता होती है। छात्रावस्था में हम अधिक मित्र बनाते हैं। बाल्यावस्था की मित्रता में मधुरता एवं अनुरक्ति होती है वि"वास होता है अनेक सुन्दर कल्पनाएँ, क्षोप भरी बातें, आवेग पूर्ण लिखा–पढ़ी उथल–पुथल भावों से भरा रूप होता है। पुरूष की एवं युवावस्था की मित्रता बाल्यमित्रता से भिन्न होती है। हम छोटी बातों को देखकर ही मित्र बना लेते हैं पर मित्र ऐसा होना चाहिये जो हमें प्रोत्साहित भी करें, किन्तु दोषों को परिष्कार भी करे, वह सच्चा पथ प्रद"ाक होता है, उसमें सहानुभूति होती है। यह आव"यक नहीं कि दोनों मित्र एक रूचि या प्रकृति, एक ही हो भिन्न रूचिया वाले भी मित्र होते हैं। राम–लक्ष्मण, दुर्योधन–कर्ण इसके उदाहरण हैं। हमारा मित्र हमसे अधिक आत्मबल वाला होना चाहिए मित्र शुद्ध हदय, मृदुल ि"ाष्ट सत्यार्थी, पुरूषर्थी एवं वि"वस्त होना चाहिए वि"व के अनेक महापुरूषों ने मित्रों की सहायता से अनेक महान् कार्य किये ह। मित्रों ने उन्हें सुमार्ग दिखाते उत्साहित किया, कुमार्ग से निकाल सुख और सौभाग्य की ओर बढ़ाया है, उनके द्वारा कर्म क्षेत्र में लोग श्रेष्ठ बनें हैं–मित्रता जीवन मरण के मार्ग के सहारे के लिये है– वह सैर सपाटे, मनोरंजन के साथ सुख–दुःख में साथ देने के लिये है। मित्र के सहयोग एवं उपकार से दोनों का भला होता है दोनों की उन्नति होती है– दोनों एक दूसरे का साथ देते हैं । हमें अपने जान पहचानें वालों को भी उसी कसौटी पर कसना चाहिए जिस पर हम मित्रों को परखते है, तुम्हें जितने गुण मिले हों, उन्हें पचास गुणा करके लौटाना चाहिए न्याय के लिये कष्ट उठाना, विलास और अन्याय हेतु भोग–विलास से उत्तम है। ि"ावाजी, प्रताप इसके उदाहरण हैं। हमें कर्तव्य एवं महान् कार्य करने चाहिये। हमें अपनी आत्मा की आवाज सुननी चाहिए संगत का असर हमारे जीवन पर अव"य पड़ता है, अतः पहचान करने क लिये हमें स्वार्थ से काम लेना चाहिए। हमें उनसे ही पहचान करना चाहिए जो उपयोगी चरित्रवान एवं सहायक हो जो ऐसे न हो उनसे दूर रहना चाहिये। मुफ्त में मनोरंजन हेतु साथ देने वाले अनेक मिल जाएँगे किन्तु उनमें यदि मनचले, मूर्ख व्यक्ति हों तो उसका परिणाम ठीक नहों होता। मूर्ख व्यक्तियों के लिए संसार में न सुन्दर आचरण है, न विद्वान, उनके लिये उत्तम कुछ भी नहीं–वे केवल इन्द्रिय लिप्त, कुत्सित, पतित एवं संस्कार हीन होते है। कुसंग का असर सबसे भयानक होता है– वह नीति, सद्–वृत्ति, बुद्धि सभी का ना"ा करता है। इंग्लैण्ड के एक विद्वान को सच्चे साथी मिले तो वह आजीवन सुखी एंव सन्तुष्ट रहा। कुछ लोगों को क्षणिक साथ भी बुद्धि भ्रष्ट कर देता हैं। भद्दी और बुरी बात हम जितनी जल्दी याद कर लेते है या फूहड़ गीत याद कर लेते है उतनी शीघ्र कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं सीखते– अतः ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए पहले सामान्य समझी जाने वाली बात भविष्य में कष्टदायक हो सकती है अतः सजग रहना चाहिए। एक बार कुसंगति में पड़ने पर पतन ही पतन होता है– कहा है– काजल की कोठारी में कैसे हूँ सयानों जाय एक लीक कालिख की लागि है पै। इसका यह तात्पर्य नहीं कि युवा को समाज में प्रवे"ा नहीं करना चाहिए अच्छे समाज का अच्छा प्रभाव पड़ता है। गाँव से शहर में आने वालों को अच्छे साथी नहीं मिलते उन्हें साहित्य समाज में प्रवे"ा करना चाहिए पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। समाज द्वारा हम दूसरों की भूल को क्षमा करना सीखते है। ठोकरें खाकर नम्रता और अधीनता का पाठ पढ़ते है, हमारी विवेक बुद्धि बढ़ती है, शक्ति बढ़ती है, आत्म वि"वास बढ़ता है। हमारी धारणाएँ बनती है, सहयोग की भावना प्रबल होती है। आचरण में सुधार होता है।

4. अध्ययन –(मिश्रबन्धु)

सारांश

अध्ययन निबन्ध मिश्र बन्धु द्वारा रचित है। इस विचारात्मक निबन्ध में लेखक ने अध्ययन के विभिन्न सोपानों को स्पष्ट किया है। अध्ययन 'ध्यै' धातु से निकला है जिसका प्रयोजन अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान है। अपने अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान चिरस्थायी और लाभकारी होता है। यह संसार असीम ज्ञान का भंडार है परन्तु मनुष्य के पास इसे प्राप्त करने के लिए समय कम है। ज्ञान पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण करने

से बढ़ता है तथा इसमें नयी जानकारी बढ़ती है। ज्ञानवर्धन करने के लिए आत्मानुभव, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भी आव"यकता पड़ती है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए निरन्तर कठिन परिश्रम तथा साधना की आव"यकता है। बिना परिश्रम के कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। उचित रूप से परिश्रम हमारे शरीर व मस्तिष्क के लिये अच्छा रहता है। उचित प्रयोग से यह बढ़ती बुद्धि होने पर भी परिश्रम करने वाला ही आगे बढ़ पायेगा। वर्तमान समय में बहुत से लाग जब भली प्रकार विद्याध्ययन नहीं कर सकते है तो बुद्धि की कमी को दोष देते है, परन्तु ऐसा नहीं होता है। साधारणतया ध्यान व परिश्रम की कमी हमें अध्ययन के लाभ से दूर ले जाती है। भाग्यानुसार बुद्धि अलग–अलग होती है। जिस प्रकार आयुर्वेद के नियम पालने से साधारण व्यक्ति भी अच्छे स्वास्थ्य वाला हो जाता है वैसे ही उद्यमी मानव बुद्धि को बढ़ा सकते हैं। मनुष्य और प"ाु में अन्तर विद्या से ही है। मनुष्य में कुछ प"ाुता अर्थात् जन्मजात प्रवृत्ति होती है परन्तु अध्ययन के द्वारा मनुष्य की प"ाुता की प्रवृत्ति कम होती है। अध्ययन में समय का सर्वाधिक महत्व है। समय का उचित प्रयोग ही अध्ययन में सहायक है। सभी कार्य यथा समय करना करना चाहिए। अति हमे"ाा हानिकारक होती है। मनुष्य को विविध विषयों में ज्ञान प्राप्त करना उचित है। समय के साथ कार्य में तल्लीनता भी होना चाहिए। एकाग्रता बहुत बड़ी शक्ति है। उत्साह भी कार्य की प्रगति के लिये आव"यक है। आ"चर्य भाव मन में आने से ज्ञान प्राप्ति की लालसा बढ़ती है। उदासीनता से हमे"ाा कार्य में बाधा उत्पन्न होती है। अज्ञान को देखकर उसके बारे में जानने की को"ा"ा कर चाहिये।मिश्र बन्धु के अनुसार अध्ययन कैसे किया जाए यह एक महत्वपूर्ण प्र"न है। अध्ययन हमारे मस्तिष्क का भोजन है जिसे प्रकार अत्यधिक खाने से स्वास्थ खराब हो जाता है एवं कम खाने से कमजोरी हो जाती है उसी प्रकार अत्यधिक अध्ययन से आत्मीकरण नहीं हो सकता है तथा कुछ न पढ़ने से व्यक्ति मूर्ख ही रहता है। नये व पुराने विचार ध्यानपूर्वक पढ़ने पर मनन करना चाहिये। उद्देयपूर्ण संक्षिप्त बातें अव"य ध्यान में रखनी चाहिए। मिश्र बन्धुओं के अनुसार अध्ययन दो प्रकार का होता है– (1) साधारण (2) दैनिक व्यापार संबंधी। साधारण अध्ययन से मानसिक उन्नति होती है। व्यापार संबंधी अध्ययन से व्यापारिक उन्नति होती है। समझदार मनुष्य को अवका"ा के समय में साधारण ज्ञान की ओर ध्यान लगाना चाहिए। अध्ययन के संबंध में मनुष्य को अंधानुकरण नहीं करना चाहिए।

अध्ययन का मूल दो प्रकार का है– स्वावलंबी और परावलंबी। स्वावलंबी अध्ययन अपने ही अनुभवों और विचारों से प्राप्त होता है। परावंलबी अध्ययन पुस्तकों, गुरूओं, मित्रों आदि पर आश्रित है। स्वावलंबी अध्ययन में ज्ञान–वृद्धि के लिए बहुत अधिक समय की आव"यकता है परन्तु यह चिरस्थायी होता है। केवल दूसरों पर आश्रित अध्ययन से पूर्ण उन्नति नहीं होती। प्रत्येक वस्तु को ध्यानपूर्वक देखते जाइए तब आपकी अधिकाधिक ज्ञान वृद्धि होगी कि किस पदार्थ से क्या "िाक्षा मिलती है, वह क्या–क्या काम आता है, दोनों आँखे खोलकर देखो और हमे"ाा सोचों कि यह वस्तु ऐसी क्यों बनी है, इससे क्या लाभ है। सभी नवीन बातों में तार्किक सिद्धान्तों को कभी नहीं भूलना चाहिए। मिश्र बन्धुओं के अनुसार एक पेन्सिल तथा कोषग्रंथ साथ में रखना चाहिए तथा कहीं भी कुछ पढ़ते वक्त नहीं आने पर तुरन्त समाधान कर लेना चाहिये। अध्ययन करते वक्त अपने प्रिय विषय के अलावा अन्य विषय का भी ध्यान रखना चाहिए। महापुरूषों के चरित्र से हम अच्छे उदाहरण प्राप्त कर सकते हैं। अध्ययन के अलावा मनुष्य को किसी न किसी कला में पारंगत होना आव"यक है। हुनर की वृद्धि अव"य करनी चाहिए परन्तु इन्द्रिय संयम पर भी पूर्ण ध्यान चाहिए। प्रत्येक मनुष्य का एक न एक लक्ष्य होना चाहिए। जिस चीज में हम मन लगाते हैं वही हमारे लिए आनन्द है। प्रत्येक व्यक्ति की रूचि और प्रत्यत्न करके सत् साहित्य के निरन्तर अध्ययन की आदत डालनी चाहिए। विद्वानों की मान्यता है कि पुस्तक अध्ययन के माध्यम से अपने घर के एकांत कमरे में हम संसार भर के महापुरूषों और उनके विचारों से सहज ही साक्षात्कार कर सकते है। अनेक आनन्दमय जीवन और सफलता के रहस्य जान उसकी राह पर अपना जीवन भी वैसा ही बना सकते है। पुस्तकों के अध्ययन के माध्यम से बिना चले–फिरे अपने घर के

एकांत कमरे में बैठकर ही हम दे"ा–विदे"ा की यात्रा कर सकते है। मानव सभ्यता–संस्कृति को अपनी विकास यात्रा में किन–किन कठिन परिस्थितियो से गुजरना पड़ा, क्या–क्या मुसीबतें भोगनी पड़ी यह सब जानकर अपने आपको उन सबसे बचाये रख प्रगति और विकास के नये क्षितिजों का उद्घाटन और स्प"ा कर सकते हैं। प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक बेकन का कथन है– हमें विवेक और विचार के लिए पढ़ना चाहिए। विद्यानुरागी के लिए अध्ययन एक बहुत भारी मंत्र है। इससे चिरकाल का संक्षिप्त ज्ञान भण्डार पाठक के सामने खुल पड़ता है।

5. उद्देश्य और लक्ष्य (रामचन्द्र वर्मा)

सारांश

श्री रामचन्द्र वर्मा का निबन्ध उद्दे"य और लक्ष्य बहुत ही विवेचनात्मक व बौद्धिक है तथा मनुष्य के जीवन के विचारों को एक नया मोड़ देने वाला है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन का एक लक्ष्य व उद्दे"य बना लेना चाहिए। यदि हमारे जीवन का कोई उद्दे"य नहीं है तो हम बिना मंजिल के यात्री है जिसे यह नहीं पता कि उसे कहाँ जाना है। इसलिये जीवन में अगर कुछ बनना है या कुछ करना है तो एक उद्दे"य नि"चित कर लेना चाहिए तथा उस लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिये। उद्दे"य या लक्ष्य बनाने का सर्वोत्तम समय कि"ोरावस्था का होता है इस समय हमें क्या करना है हम क्या बनना चाहते है हमारी रूचि क्या है इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। अपना उद्दे"य स्थापित कर लेना सफलता का प्रथम सोपान है। किसी भी प्रकार का उद्दे"य अथवा लक्ष्य अपनी योग्यता तथा परिस्थितियों के आधार पर बनना चाहिए। उद्दे"य और लक्ष्य उद्दे"य कभी नहीं बनाना चाहिये। साधरणतया माता–पिता अपने विचारों को और रूचि को बच्चों पर थोपते हैं जिससे भविष्य में बहुत परे"ाानी उठानी पड़ती है तथा अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचने के कारण भटक जाते है या अन्दर से टूट जाते है, फलस्वरूप वे अनेक मानसिक व्याधियों के ि"ाकार हो जाते है तथा किसी भी महत्वपूर्ण लक्ष्य न प्राप्त कर पाने की स्थिति में वे बहुत साधारण जीवन बिताते है।

अपनी शक्ति के अनुरूप ही कार्य सोचें। युवावस्था में मनुष्य बहुत साहसी होता है, वह थोड़ी सी बात सोचकर कार्य करने की ठान लेता है। अपनी साधारण पसन्द अपनी लक्ष्य बना लेना संभव नहीं है। किसी को अभिनय अच्छा लगता है तो वह यह न समझ ले कि में अभिनय के क्षेत्र को अपना लूँ, किसी मधुर संगीत को सुनकर स्वयं संगीतकार, गीतकार नहीं बन सकते, इस प्रकार की कल्पना प्रायः सपने के समान होती है। अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते समय बड़े लोगों की राय भी जानना चाहिए तथा उनके अनुभव से लाभ उठाना चाहिए। लक्ष्य प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयाँ आती है, वे ही नवयुवक लक्ष्य तक पहुँच पाते है, जिनमें दृढ़ इच्छा शक्ति हो, बाधाओं से लड़ने की क्षमता हो, विपत्ति को ई"ार इच्छा समझकर धैर्यपूर्वक सहना जानते हों। ईर्ष्या, द्वेष आदि से दूर रहते हों। **स्वामी विवेकानन्द** ने कहा था–

उठो जागो और तब तक न रूको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो।

अंग्रेजी शासन काल के प्रभाव से हमारे दे"ा के नवयुवकों में नौकरी का बड़ा प्रलोभन हो गया। साधारणतः माँ–बाप बच्चे को नौकरी करवाने के लिये पढ़ाते है। साधारणतः नौकरी में एक नि"चित धनरा"ाि मिलती है जिससे कि बड़ी मु"किल स गुजर–बसर होता है। आर्थिक कठिनाई में व्यक्ति कुछ अन्य कार्य भी करने लगता है। इस प्रकार उसका जीवन कठोर परिश्रम में बीतता है। कुछ अच्छी प्रतिष्ठा व पैसा देखकर उसी को अपना लक्ष्य बना लेते हैं परन्तु बाद में वे इसमें सफल नहीं होते। हमारी लालसा अनन्त है लालसा के सहारे हम उद्दे"य व लक्ष्य बना लें तो सफल नहीं हो सकते। किसी चित्रकार के चित्रों को देखकर हम भी टेढ़ी–मेढी लकीरें खींच लें तो चित्रकार नहीं बन जाते। किसी भी कार्य की सफलता के लिये आव"यक है– उत्कृष्ट इच्छा, दृढ़–संकल्प पूर्ण अध्यवसाय और वास्तविक योग्यता की आव"यकता होती है। जीवन में वास्तविक सफलता मानवीय गुणों के आधार पर

मिलती है। गलत नीतियों का प्रयोग करके यदि सफलता प्राप्त भी हो गई तो वह शीघ्र ही विफलता में बदल जायेगी। मनुष्य स्वभाव से ही उच्चांकाक्षी होता है। अपनी आकांक्षा को पूर्ण करने के लिये मनुष्य को कठिन परिश्रम करना चाहिये। सच्चा परिश्रम और प्रयत्न ही हमें मनुष्य बना सकता है। उद्दे"य को प्राप्त करने के लिये हमें निष्काम कर्म के सिद्धान्त को अपनाना चाहिए। केवल कर्म करना तुम्हारे अधिकार में है, उसके फल पर तुम्हारा कोई व"ा नहीं किए हुए कर्मो के फलों की आ"ाा मन म कभी न रखो। फल की इच्छा रखकर कोई कार्य करना बहुत बुरा है। लक्ष्य प्राप्ति में छोटी–छोटी बातों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। तुच्छ बातों से भी मनुष्य का जीवन नष्ट हो जाता है। उद्दे"य या लक्ष्य निर्धारित करने से पहले हमें अपनी वास्तविक शक्ति तथा रूचि का पता लगा लेना चाहिए। प्रायः घर की ि"ाक्षा, मित्रों का व्यवहार, हमारी परिस्थिति का हमारी रूचि पर प्रभाव पड़ता है। लक्ष्य निर्धारित करने व प्राप्त करने में सबसे बड़ा हाथ माता का होता है। बच्चे वही बनते हैं जो उनकी माँ चाहती है। एक माँ सौ ि"ाक्षक के बराबर है। राजमाता जीजीबाई ने ही ि"ावाजी को वास्तविक ि"ावाजी बनाया। व्यक्ति अपने जीवनकाल में सबसे अधिक माँ का ऋणी होता है। माँ के अलावा मनुष्य पर दूसरा प्रभाव उसके मित्रों का पड़ता है । किसी भी व्यक्ति के मित्रों को देखकर उसके बारे में पता लगाया जा सकता है। संगति से मनुष्य का जीवन ही बदल जाता है। अच्छी संगति से उसमें सद्गुण आते है तथा खराब संगति से उसमें दुर्गुण आते है। बचपन में हमारा मन कच्ची मिट्टी के समान होता है उसे कोई भी आकार दिया जा सकता है। तुम्हारे जीवन की योग्यता बहुत से अं"ाों में तुम्हारे मित्रों की योग्यता और विचारों पर निर्भर करती है। एक आद"ार् मित्र हमारे लिए संजीवनी है। बुरे मनुष्यों का साथ आपको कभी भी दूसरों का उपकार करने के योग्य नहीं रख सकता है।

अपने जीवन को परम् पवित्र और आद"ार् बनाने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि हम सदा ऐसे लोगों का साथ करे जो विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा और विचार आदि में हमसे कहीं अच्छे हों। मित्र वही जो बुरे समय में काम आए। सच्चा मित्र भगवान की ओर से दिया गया सबसे बड़ा वरदान है। अनेक लोग अपने मित्रों के कारण ही जीवन में सफल हुए है। अतः ऐसे मनुष्य को अपना आद"ार् और पथप्रद"ार्क बनाओं जिनका अनुकरण करने में तुम्हारी प्रतिष्ठा हो। जैसे खराब भोजन करने से शरीर खराब हो जाता है वैसे ही खराब मित्र से मस्तिष्क व विचार खराब हो जाते हैं।यदि हमें अपने जीवन के उद्दे"य को श्रेष्ठ बनाना हो तो श्रेष्ठ लोगों का साथ करना चाहिए। अपने जीवन के उद्द"य को स्थिर करने में हमें अनेक कारणों से सहायता मिलती है। कभी–कभी एक घटना जीवन को परिवर्तित करने में काफी है। वाल्मीकि कुछ ही क्षण में डाकू से साधू हो गये। तुलसी पत्नी की एक फटकार से महाकवि तुलसी हो गये। हमें अपनी सारी शक्तियों से लक्ष्य प्राप्त करने क लिये लग जाना चाहिए जो पूरी शक्ति से प्रयत्न करता है उसे कभी निरा"ा नहीं होना पड़ता है। कार्य कोई भी हो, छोटा नही है किसी भी कार्य से घृणा नहीं करनी चाहिए बल्कि उस काय में अपने प्रयत्न से कु"ालता उत्पन्न करनी चाहिए। काम को कर्तव्य समझो, सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी। लक्ष्य को ही अपनी जीवन कार्य समझों, हर समय उसी का चिन्तन करों उसी को स्वप्न देखो, उसी का सहारे जीवित रहो।निबन्ध की भाषा, सरल प्रवाहमयी व विषयानुकूल व प्रेरणास्पद है। निबंध को अधिक रोचक व उद्दे"यपूर्ण बनाने के लिय रामचन्द्र वर्मा ने अनेक सुक्तियां का प्रयोग किया है जो कि बहुत ि"ाक्षाप्रद बन पड़ी है। मुहावरों का प्रयोग विषय प्रवाह को आगे बढ़ाने व अपनी बात को स्पष्ट करने में सहायक हुए है। सम्पूर्ण निबन्ध की भाषा एक जंजीर में बंधी हुई लगती है। जंजीर की कोई भी कडी कमजोर नहीं हैं वर्मा जी अपनी लेखनी के द्वारा प्राप्ति कैसे सुगम सरल हो सकती है उसमें क्या बाधाएँ है, उसे कैसे दूर किया जा सकता है यह बताने में पूर्णतः सफल हुए है।

कविता

6. हिमालय के प्रति (रामधारी सिंह दिनकर)

हिन्दी साहित्याकाश में दिनकर जी का उदय एक असाधारण घटना कही जा सकती है। वे हमारे युग के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रख्यात रहे। कलाकार के रूप में वे एक ईमानदार व स्पष्टवादी लेखक के रूप में उभरे और यही कारण है कि न केवल कविता अपितु साहित्य की अनेक विधाओं में वे निर्भीक होकर राष्ट्रीयता के स्वर का गुणगान करते रहे। अपनी हूँकार भरी वाणी से हिन्दी भाषी जनता व साहित्य को झकझोरने का प्रयास किया। उनकी कविताओं में सामाजिक उत्पीड़न, बेबसी वेदना का क्रन्दन नहीं बल्कि उनके विरूद्ध गर्जन सुनाई देता है। वे केवल क्रांतिकारी कवि ही नहीं बलिक एक उच्चकोटी के गद्य लेखक भी थे। उन्हें साहित्य अकादमी तथा पद्मभूषण जैसी उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होनें साहित्य सेवा कर देश को अमूल्य निधि प्रदान की।

वैसे तो दिनकर जी के काव्य का वास्तविक आरम्भ 1930 से ही हो गया था, क्योंकि इसी समय उन्होनें देश की भयाक्रांत स्थिति को भोगा और जिया था। स्वाधीनता प्राप्ति की ललक, समास और देश की वैषम्यता को हटाकर सबके लिए सुख खोजने की उमंग उस समय प्रत्येक भारतवासी के मन में हिलोरे ले रही थी।

1947 के पूर्व ही दिनकर जी को यह विश्वास हो गया था कि क्रांति का समय नजदीक आ गया हैं, उन्होनें नवजवानों में नई स्फूर्ति व जागृति जगाने का प्रयास देश की अनभिज्ञ जनता के समक्ष किया। उनकी हिमालय कविता इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करती है।

व्याख्या

1. मेरे नगपति मेरे विशाल ..... वितान।

प्रसंग - प्रस्तुत कविता कवि रामधारीसिंह दिनकर के द्वारा रचित कविता 'मेरे नगपति' हिमालय से ली गई है, इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने देश के नौ जवानो को संदेश दिया है।

राष्ट्रकवि द्वारा देश की जनता में जागृति लाने का कार्य हिमालय को प्रतीक बनाकर किया गया है।

व्याख्या- कवि पर्वतराज हिमालय को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे हिमालय! तुम मातृभूमि की मजियों में सर्वश्रेष्ठ हो, तुम्हारी महिमा का गुणगान किन्हीं शब्दों में नहीं किया जा सकता। तुम्हारा रूप वृहत है, तुम विराट व विशालकाय हो, तुम्हारी महिमा अद्भुत है। तुम पुरूषत्व से युक्त ऐसी ज्वाला हो जो अडिग रहकर अपने कर्मो को पूरा करती है, हे हिमालय तुम भारत के भूमि के शीर्ष हो, जिस पर सम्पूर्ण मातृभूमि को गर्व है।

कवि हिमालय के माध्यम से व्यक्त करते हैं कि तुम अजेय हो, तुम पर विजय प्राप्त करना कोई साधारण कार्य नहीं है। तुम इस असीम व्योम (विशाल आकाश) में पुरूषत्व से युक्त होकर सीना तानकर खड़े हो, तुम भारत भूमि के लिए ईश्वर तुल्य व पूज्य हो। तुम्हारी महिमा अपरम्पार है। कवि प्रश्न करते हुए, हिमालय से कहते हैं कि तुम इस शून्य में कौन-सी महिमा का गुणगान करने के लिए खड़े हो।

2. कैसी अखंड या चिर समाधि ..... पद पर स्व।

व्याख्या- कवि प्रश्न के माध्यम से हिमालय से पूछना चाहते हैं कि हे हिमालय! तुमने यह कौन-सी कभी खत्म न होने वाली चिर समाधि लगा रखी है, तुम एक योगी, तपस्वी की भाँति कौनसे ध्यान में मग्न होकर खड़े हो। ऐसी कौनसी समस्याएँ हैं, जिनका समाधान तुम्हारे मौनव्रत धारण करके ही किया जा रहा है। तुम अनंत गहराईयों में मौन खड़े होकर किस विचार-विमर्श में लगे हो।

कवि हिमालय को तपस्वी की संज्ञा देते हुए कहते हैं कि, हे मौन तपस्वी! अपनी तपस्या भंग कर नेत्रों को खोलो, देश किन-किन स्थितियों और समस्याओं से जूझ रहा है, जरा अपनी दृष्टि उसकी अवस्था पर भी डालो।

कवि स्वतंत्रता के पूर्व की सामाजिक समस्याओं और स्वतंत्रता प्राप्ति की छटपटाहट को व्यक्त करते हुए देश की जनता के समक्ष उद्घाटित करना चाहते है। देश को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं हे हिमालय तू अपने मौन को त्यागकर इस देश की दुर्दशा को देखने का प्रयास कर।

3. सुख सिंधु पंचनद ..... मेरे नगपति मेरे विध।

व्याख्या- कवि एक बार फिर प्रश्न करते हैं और कहते हैं कि देश में बहने वाली इन पांचों नदियों का नीर तेरी ही करूणा है। अर्थात् तेरे ही नेत्रों द्वारा यह नीर बह रहा है। अर्थात् क्या तू भारत माता व देश की स्थिति को स्वयं अपने नेत्रों से देख रहा है? जिस देश में तू अडिग होकर खड़ा हैं उसी देश की स्थिति को आज तू निहार, आज उसी पुण्य भूमि पर संकट के बादल मंडरा रहे है, जिसकी सुरक्षा का दायित्व तुझ पर सौंपा गया था। जिसका प्रहरी बनकर तू उसकी सुरक्षा का कार्य कर रहा हैं उस मातृभूमि की रक्षा हेतु तुझे अपना तन-मन-धन लगाना होगा। यहीं कवि नव-जवानों को हिमालय के समान सुदृढ़ होने की शिक्षा देते है।

क्योंकि आज इसी पावन भूमि पर संकट के बादल गहरा गए है। और आज तुझे उस देश के संकट को दूर कर उसकी रक्षा का कार्य करना होगा। जो तेरा प्रथम कर्तव्य है।

कवि देश की स्थिति को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज देश की जनता (मातृ भूमि के सपूत) व्याकुल हो तड़प रहे है। न केवल परतंत्रता अपितु आंतरिक व्यवस्था रूपी विविध नाग भी अपने ही देश के लोगों को डंसने का प्रयास कर रहे है। विषमताओं का विविध जाल चारों ओर फैलाया जा रहा है। इसलिए हे हिमालय तू इस मातृभूमि मे जागृति लाने का कार्य कर। क्योंकि तू विशालकाय हैं व सर्वश्रेष्ठ हैं तुझ पर इस देश की भारी जिम्मेदारी छोड़ी जा सकती है।

4. कितनी मणियाँ लुट गई ..... बलधाम कहे।

संदर्भ - कवि जब अपने समसामयिक समाज की स्थितियों व परिस्थितियों को व्यक्त करता हैं तो न केवल वह उस समय की स्थिति को व्यक्त करता हैं अपितु अपने वाले समय व समाज व युग की संभावनाओं को भी अपनी लेखनी में पिरोने का प्रयास करता हैं और यही प्रयास दिनकर जी ने अपनी कविता के माध्यम से किया।

व्याख्या- कवि मातृभूमि के लिए 'सोने की चिड़िया' की उपमा देते हुए कहते हैं कि एक समय था जब भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था अर्थात् धन संपदा से पूर्ण था, आज उसके पास कुछ भी शेष नहीं रहा है। यह वैभव न केवल आर्थिक अपितु किसी भी दृष्टि से देखें तो नैतिक, राजनैतिक, आर्थिक या सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से देश पतन की कगार की ओर ही बढ़ा है। उसकी सभी निधियाँ समाप्त हो गई है। कवि हिमालय के माध्यम से देश की सोई हुई जनता पर कटाक्ष कर कहते हैं कि देश की यह स्थिति तेरी ऑखों के सामने हुई हैं तथा विदेशी साम्राज्य ने इस देश के वैभव को तेरे ही सामने लूट लिया हैं और तू ध्यान मग्न चुपचाप खड़ा होकर इस विरान होते हुए देश को देख रहा है।

कवि देश की दुर्दशा को यहाँ स्पष्ट करते हैं कि देश की स्थिति अत्यंत ही शोचनीय हो गई हैं वे द्रोपदी के माध्यम से देश की महिलाओं की स्थिति को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज देश में कितनी ही द्रोपदियों को असम्मान सूचक घटनाओं का सामना करना पड़ रहा हैं, कवि पौराणिक उदाहरणों के माध्यम से तथा युग में चल रही विडम्बनाओं के माध्यम से देश की अकर्मण्य जनता को नसीहत देते हुए उनमें जागृति जगाने का प्रयास कर रहे है, कवि चित्तौड़ में होने वाले जौहर को स्वीकारने के लिए अनेक नारियों को विवश होना पड़ा वे देश की नारियों की करूण एवं व्यथित स्थिति को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमारे देश में ऐसी नारियाँ भी हुई जिन्होनें

7. मोचीराम (धुमिल)

प्रस्तुत कविता कवि धुमिल द्वारा रचित आधुनिक युग की मुक्त छंद में लिखी एक नई कविता है। यह एक प्रतिनिधि कविता है। सातवें और आठवें दशक में लिखी गई यह कविता प्रगतिशील संघर्ष को बतलाती है। इस कविता के माध्यम से कवि ने हिन्दुस्तान की क्षत-विक्षत तस्वीर को प्रस्तुत किया है। यह कविता लोकतंत्र की विफलता और सामाजिक, राजनैतिक व नैतिक स्तर पर हो रहे आम-आदमी के साथ विश्वासघात को प्रस्तुत करती है। कवि आदमी के ठंडे पन से नाराज है। वे उन्हें अपने अधिकारों के लिए जाग्रत होने के लिए कहते है। आम आदमी की तकलीफ को कवि धुमिल ने जितना महसूस किया हैं उतना किसी अन्य कवि ने नहीं। उनकी यह कविता मुक्त छंद में लिखी गई बड़बोली कविता है।

कवि ने स्वयं मोचीराम के स्थान पर बैठकर उसकी अनुभूति को अपनी अनुभूति से संप्रक्त (जोड़ने) का प्रयास किया है। कवि ने काव्य नामक मोचीराम के माध्यम से अपने मुहावरे को विकसित करने का प्रयास किया है। कवि काव्य नायक की ऑंख से सबको समानता के सिद्धांत के आधार पर देखता है। कवि ने इस कविता में मोची की भाषा, उसका लहजा एवं उसके प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का इस्तेमाल या प्रयोग ही नहीं किया बल्कि एक अच्छे अभिनेता की तरह मोचीराम के किरदार को निभाने का प्रयास किया।

सारांश - कवि समाज के द्वारा बनाई गई अमीर व गरीब के बीच की खाई को चौड़ा होते हुए देख रहा है। मोचीराम इस समाज को समानता की दृष्टि से देखता है। उसकी दृष्टि में न कोई बड़ा है, न कोई छोटा। कवि मोचीराम के अनुसार फटे हुए जूतों और पेशेवर हाथों के बीच उन आम आदमी की बात करता हैं, जिसका जीवन दो समय के भोजन की व्यवस्था करने में ही बीत जाता है। कवि अमीर व गरीब के जूते के माध्यम से दोनों स्थितियों को प्रस्तुत करता है। उनके अनुसार आज गरीब वर्ग समाज की व्यवस्थाओं से पीड़ित आर्थिक मार को सहता हुआ जीवन जीने के लिए बाध्य है। बढ़ती हुई महंगाई, अमीरों का अत्याचार, समाज द्वारा इस गरीब तबके को शोषित और उपेक्षित करना समाज की व्यवस्था का अंग बनते जा रहे है। मोचीराम यहॉं एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वास्तव में कवि सर्वहारा वर्ग या आम आदमी की तकलीफों को जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत कर रहा है।

कवि अमीर वर्ग की बात करते हुए, गरीबों को उनके द्वारा दिए गए जिल्लतों और उनके द्वारा किए गए अत्याचारों का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। कवि कहते है - 'गरीब वर्ग जब स्वयं मेहनत एवं मशक्कत कर ईमानदारीपूर्वक दो वक्त का भोजन सम्मान से नहीं जुटा पाता तब यही वर्ग अपने नैतिक रास्तों को बदलकर अनैतिकता की तरफ बढ़ जाता हैं अर्थात् समाज मे गलत कामों के लिए यहीं अपने पैर बढ़ाता है।

कवि ने मोचीराम को भी आम आदमी माना है। मौसम और भाषा के प्रभावों से वह भी अछूता नहीं रहता क्योंकि वह भी एक इंसान है। मोचीराम की आत्मा उसे बार-बार धिक्कारती हैं उसे काम की ओर बढ़ाती है। किंतु ऐसे लोग जो गरीबी को जानते नहीं है। और जो उसे केवल पुस्तकों का हिस्सा समझते है वे लोग मोचीराम को शायर की संज्ञा देते है जबकि कवि के अनुसार आग और सच्चाई, अमीर व गरीब के भेद से परे होती है। समाज निर्माण में अमीर व गरीब दोनों का हिस्सा बराबर होता है। कुछ लोग अपने विरोध को नारे लगाकर व्यक्त करते है। तो कुछ लोग समाज की स्थितियों को चुपचाप सहन करते है।

कवि ने अपनी कविता में अमीर और गरीब व्यक्ति की पहचान उसके जूतों से की है। वह उदाहरण देकर समाज में उनकी स्थिति को व्यक्त करता हैं जो अमीर होकर और अधिक कमाता हैं और गरीब होकर और बद्तर स्थिति में जीता है। गरीब व्यक्ति की स्थिति खंबे पर लटकी पतंग की तरह होती हैं जो फड़फड़ाती रहती हैं कट जाती हैं पर निकल नहीं पाती। ऐसा ही आम आदमी हैं जो समाज व्यवस्था की मार हंसते हुए उसमें जीवन जीने के लिए बाध्य है।

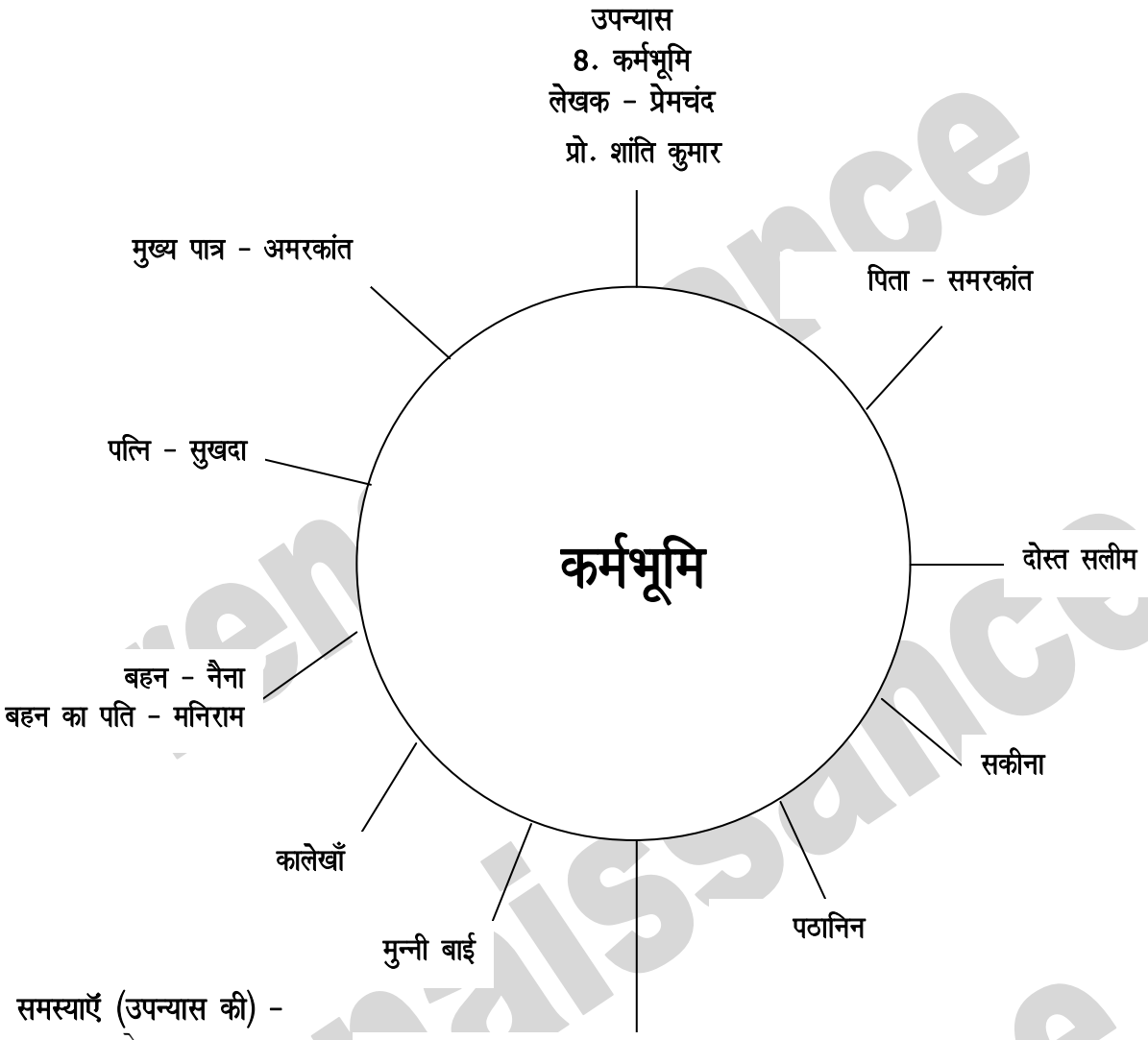

समस्याएँ (उपन्यास की) -

1. दहेज प्रथा
2. महाजनी सभ्यता
3. अछूतोद्धार
4. कालाबाजारी
5. स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार
6. स्वतंत्रता आन्दोलन

सांराश

कर्मभूमि उपन्यास की कथावस्तु -

कर्मभूमि उपन्यास लेखक प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास हैं जिसमें देशभक्ति की भावना को लेखक ने समाज में जागृत करने का सफल प्रयास किया है। कर्मभूमि एक घटनाप्रधान उपन्यास हैं जिसमें समाज की तात्कालीन स्थितियों को दर्शाया गया है। लेखन ने एक-एक पात्र को एक-एक समस्या को बतलाने के लिए चुना है। लेखक का उद्देश्य इस समाज की समस्याओं से देश के लोगों में जागृति पैदा करना तथा स्वतंत्रता आन्दोलन द्वारा उन्हें तैयार करना था।

उपन्यास में लेखक ने एक आदर्शवादी पात्र अमरकांत के चरित्र को उभारा है। प्रेमचंद जी के साहित्य की विशेषता हैं कि उनमें आदर्श के साथ यथार्थवादी दृष्टिकोण भी था। उन्होनें इस उपन्यास में सरल सहज भाषा शैली का प्रयोग कर आम पाठक के लिए उपयुक्त साहित्य का निर्माण किया।

पाठक की रूचि के अनुरूप कहानी का गठन उपन्यास के अनुरूप ढालने की कला उपन्यास कार के पास होनी चाहिए। वह मुख्य कहानी को अनेक सहायक कहानियों द्वारा बल प्रदान करता है।

कर्मभूमि उपन्यास का प्रमुख पात्र अमरकांत हैं जिसके आसपास सारा कथानक घूमता है। लाला समरकांत जो महाजन हैं सूद और ब्याज पर पैसा देकर गॉव वालों से जमीन गिरवी रखवा लेते है। अमरकांत एवं लाला समरकांत के बीच विचारों में मतभेद रहता हैं पिता अमरकांत को व्यापार में लगाना चाहते है, जबकि अमरकांत पढ़ाइ कर के सच्चे देशभक्त के रूप में देश की सेवा करना चाहता है।

लेखक ने समसामयिक समाज की समस्याओं को प्रत्येक पात्र के माध्यम से उभारने का प्रयास किया है अमरकांत बचपन से ही विमाता के दु:ख से परेशान रहते है। बहन नैना द्वारा उन्हें स्नेह दिया जाता हैं।

एक समय की बात हैं कक्षा में फीस के पैसे न भर पाने के कारण अमरकांत को बहुत ग्लानि होती है, उसके फीस के पैसे सलीम के द्वारा जमा कर दिए जाते है। यही ंसे उनकी मित्रता प्रारंभ होती है।

पिता से विरोध के बावजूद पिता अपनी बेटी नैना की शादी लालची जुआरी एवं मक्कार मनिराम से करते है। नैना को विवाह के पश्चात् दहेज हेतु सताया जाता है मनिराम दहेज के लिए उसकी हत्या तक करने से नहीं चूकता। अमरकांत द्वारा उसे सजा करवायी जाती है।

एक समय की बात हैं जब अमरकांत स्कूल शिक्षा समाज कर लेता हैं तभी पिता के जोर देने पर उसका विवाह रेणुकादेवी समाज सेविका की बेटी सुखदा से कर दिया जाता है। सुखदा रूपवती एवं गुणवती है जिसका सारा ध्यान बनाव श्रंगार में ही निकलता है। अमरकांत एवं पत्नि सुखदा के विचारों में भी समानता नहीं है। उनके बीच अनबन चलती रहती है। सुखदा चाहती हैं कि अमरकांत घरजमाई बनकर माता रेणुकादेवी के घर रहे। किंतु अमरकांत स्वाभिमानी पात्र हैं जो इस बात से इंकार कर देता है।

अमरकांत अपने प्रो. शांति कुमार के पास मिलकर भारत की स्वतंत्रता हेतु अनेक जुलूस एवं जलसों में भाग लेता है।

एक समय की बात हैं जब लाला समरकांत किसी आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाते हैं तब अमरकांत दुकान पर बैठता है, उसी समय पठाअन पेंशन के तौर पर मिलने वाला 51 रू. लेने आती हैं। पूरा दिन इंतजार के बाद अमरकांत के कहने में उसे शाम के समय रूपये दिए जाते है। अमरकांत उसे तांगे में बिठाकर घर तक छोड़ने जाता है। वहीं सकीना से उसका परिचय होता है। उसके हुनर द्वारा बनाये गए रूमालों को बेचकर उनकी गरीबी को दूर करना चाहता है सकीना के घर आने जाने का सिलसिला चलता है।

इधर मुन्नीबाई के साथ अंग्रेजों द्वारा सामूहिक बलात्कार किए जाने के बाद वह मानसिक रूप से विक्षिप्त होकर यह ठान लेती हैं कि उसे अंग्रेजों के साथ बदला देना है। एक बार चौक में तांगे में बैठे दो गोरे लोगों की हत्या कर वह पुलिस के हाथों पकड़ी जाती है। अमरकांत, सुखदा प्रो. शांति कुमार द्वारा मुकदमों की पैरवी कर उसे बाइज्जत बरी करवाया जाता है।

कर्मभूमि के माध्यम से लेखक ने गांधीवादी विचारधारा, सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेता हैं, अमरकांत व पिता के बीच तनाव बढ़ता है तथा अमरकांत घर छोड़कर चला जाता हैं इसी बीच म्युनिसिपालटी का मेम्बर बन जाता है। वहीं थोड़े समय पश्चात् वह घर लौट आता है, दोबारा वह सकीना के प्रति आकर्षक व सुखदा के प्रति विराग से घर छोड़ देता है। लगान न देने के पक्ष में वह गॉव वालों का साथ देता हैं तथा जेल जाता है।

मन्दिरों में अछूतों के प्रवेश को लेकर सुखदा नेतृत्व करती हैं तथा जेल जाती है। सुखदा से मिलने लाला समरकांत आते है उनका हृदय परिवर्तन होता हैं वे भी देश के लिए कुछ कर गुजरने की भावना रखते है।

अंत में अमरकांत किसी आन्दोलन की बागड़ोर संभालता हैं जिसमें अंग्रेजों द्वारा उसे जेल कर दी जाती है हथकड़ी लगाने सलीम आता हें तब अमरकांत उसे अपना फर्ज अदा करने के लिए कहते है। अमरकांत इस भारतभूमि पर समर्पण का भाव लेकर जेल जाते है।

उपन्यास के तत्वों के आधार पर कर्मभूमि उपन्यास की समीक्षाः-

यह प्रस्तुत उपन्यास प्रेमचंद द्वारा लिखित है। यह उपन्यास स्वतंत्रता के पहले लिखा गया है। उपन्यास में लेखक ने परतंत्र भारत की मुख्य समस्या के साथ अन्य सामाजिक समस्याओं को बताने का प्रयास किया है। इसके सभी पात्र काल्पनिक है। एक मुख्य कवि के साथ अन्य सहयांगी कथाएँ चलती रहती है, जो उपन्यास में रोचकता भरती है।

उपन्यास को सात तत्वों में बांटा गया हैं -

1. कथावस्तु
2. कथोपकथन/संवाद
3. भाषा शैली
4. चरित्र-चित्रण
5. देश काल वातावरण
6. उद्देश्य
7. नामकरण

1. कथावस्तु (कथानक) -

उपन्यास का मुख्य तत्व कथानक हैं। यह उपन्यास यथार्थ पर आधारित होते हुए भी यथार्थ उपन्यास नहीं है। इसके पात्र काल्पनिक हैं यह कथानक प्रेमचंद के जमाने के समाज को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करता है। भारत की पराधीन जनता को गांधीवादी विचारधारा स्वतंत्रता के लिए सजग बनाती है। जनता में अनेक समस्याओं एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की भावना प्रबल हो रही थी। ग्राम सुधार आन्दोलन अछूतों का मन्दिरों में प्रवेश, अंग्रेजों का अत्याचार इस उपन्यास के मुख्य बिंदु रहे है। अमरकांत शहरी जीवन को छोड़कर गॉव के उत्थान के लिए कार्य करता है।

इस उपन्यास में एक मुख्य कथानक के साथ-साथ अनेक पात्रों के माध्यम से अनेक गौण कथाएँ चलती है। सलीम, सकीना, नैना, कालेखॉ, मुन्नीबाई और रेणुका देवी की कथाएँ प्रधान कथा को आगे बढ़ाती हैं। कर्मभूमि के कथानक में हमें रोचकता दिखाई देती है।

2. संवाद -

संवाद का उपन्यास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस से कथानक आगे बढ़ता है तथा उसमें रोचकता आती है। संवादों के माध्यम से उपन्यास की कथावस्तु स्वाभाविक लगती है।

कर्मभूमि उपन्यास में संवाद या कथोपकथन छोटे और सहज है। अमरकांत व समरकांत का वार्तालाप (बात-चीत) सहज है। जिसमें परस्पर विरोध दिखाई देता है। कहीं-कहीं इसमें संवाद भाषण के रूप में आते हैं जो पाठक को नीरस देते है।

उदाहरण - समरकांत ने भौरियां बदली
क्या चीज थी?
सोने के कपड़े थे। इस तोले बताया था
तुमने तौला नहीं था
मैनें हाथ से छुआ तक नहीं।
हॉ, तुम छूते क्यूँ, उसमें पाप जो लिपटा हुआ था।

3. भाषाशैली –

उपन्यास का एक और बिंदु हैं- भाषाशैली। जो उपन्यास में कसाव उत्पन्न करती है। सधी हुई भाषा पाठक को उपन्यास के पास ले आती हैं उपयुक्त भाषा व शैली उपन्यास को स्वाभाविक बना देते है। प्रेमचंद जी की भाषा इस उपन्यास में सरल व सहज अभिव्यक्त हुई है। इनके छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा पूरा जीवन दर्शन मिल जाता है। लेखक ने अमरकांत और सलीम की आपसी संवादों को भी सहज भाषा में लिखा हैं पात्रों के अनुरूप भाषा शैली का चुनाव उपन्यास की विशेषता है। सलीम और सकीना की भाषा में अरबी-फारसी (उर्दू) के शब्द है।

प्रो. शांति कुमार की भाषा संस्कृत शब्दावली से होकर गुजरी हैं लेखक ने सामान्य बोलचाल के अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी जैसे - म्युनिसिपल कमेटी, कमिश्नर आदि का किया है। इनकी शैली वर्णनात्मक है, जिसमें नाटकीय चित्र एवं व्यंग्यात्मकता दिखाई देती है।

4. चरित्र-चित्रण –

उपन्यास में चरित्र-चित्रण का अपना विशेष महत्व होता है। पात्रों के माध्यम में ही लेखक काल्पनिक कथा को यथार्थवादी बनाते हैं इस उपन्यास समे जितने भी चरित्र उपस्थित किए गए हैं वे काल्पनिक किंतु कहानी में आकर वे वास्तविक जान पड़ते हैं। लेखक ने अनेक पात्रों के माध्यम से मुख्य कहानी को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। अमरकांत के अलावा इसमें जितने भी पात्रों का चुनाव किया हैं वे सब समाज की एक-एक समस्या को लेकर उपस्थित हुए है।

इस उपन्यास में लाला समरकांत, प्रो. शांति कुमार, सलीम, सकीना, कालेखाँ, रेणुकादेवी, सुखदा, नैना, मनीराम आदि पात्रों को बड़ी बखूबी से रखा गया है। लेखक के पात्र जीवन्त हो गए है।

इस उपन्यास का मुख्य पात्र अमरकांत हैं जो आदर्शवादी पात्र है सारे पात्रों का संबंध इसी मुख्य पात्र की कथा से जुड़कर उपन्यास में प्रस्तुत हुआ है। उपन्यास में चरित्र ही उपन्यास की वास्तविकता को दर्शाता है।

5. देश, काल वातावरण –

कर्मभूमि में सन् 1930-1935 की शहरी एवं ग्रामीण जनता का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक एवं प्रशासनिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। यह समय स्वतंत्रता पूर्व का समय था। उस समय समाज में अनेक आन्दोलन चलाए जा रहे थे। जिनका चित्रण लेखक ने बखूबी अपने उपन्यास में किया है।

6. उद्देश्य –

स्वतंत्रता पूर्व के समाज का जीता-जागता उदाहरण हमें कर्मभूमि उपन्यास में दिखाई देता हैं। किसी भी लेखक का रचना लिखने का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। लेखक अपने समसामयिक समाज जीता और भोगता है। इसलिए उसकी रचना उसी समाज की वास्तविकता को प्रकट करती है। लेखक का उद्देश्य स्वतंत्रता हासिल करने के लिए गांधी जी ने जो मंत्र फूंका था उसी को जन-जन तक पहुँचाना था। समाज में फैली कुरीतियों से देशवासियों को अवगत करना तथा अनेक समस्याओं से मुक्त करवाना था। इस उपन्यास में शहरी एवं ग्रामीण दोनों पक्षों की समस्याओं को लिखा गया है। भारत में बढ़ते हुए साम्यवाद को उभारा गया है।

7. नामकरण –

इस उपन्यास का नामकरण इस देश को कर्मभूमि के रूप में देखते हुए रखा गया है। नामकरण का आधार देशभक्ति है। जिसमें देश का हर नागरिक अपने प्राणों का बलिदान हँसते-हँसते दे दे। तथा इस जीवन में अपने कर्म को पूरा करें। इस उपन्यास के पात्र अमरकांत व सुखदा दोनों ही आदर्शवादी पात्र बताए गए है। जिसके पीछे लेखक का उद्देश्य समाज की जनता तक इस उद्देश्य को पहुँचाना है।

कर्मभूमि के मुख्य पात्र अमरकांत का चरित्र चित्रण – इस उपन्यास का मुख्य पात्र अमरकांत हैं जो उपन्यास का नायक है, यह पूरी कहानी अमरकांत के जीवन को लेकर चित्रित की गई है। उपन्यास का नायक आदर्शवादी है। स्वतंत्रता के पहले लिखा गया यह उपन्यास है, इसलिए अमरकांत के चरित्र में गांधीवादी विचार धारा दिखाई देती है।

अमरकांत के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ है –

1. **स्वाभिमानी** – उपन्यास का नायक अमरकांत स्वाभिमानी है। पिता द्वारा पढ़ाई के लिए फीस के पैसे न देने पर तथा बार-बार अपमानित करने पर वह पिता से पैसे नहीं लेता। अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए वह अपने घर तक का त्याग कर देता है (घर छोड़ देता है)। वही सुखदा के लाख समझाने पर भी वह अपने ससुराल से फूटी-कोडी नहीं लेता। इस तरह उपन्यास का नायक स्वाभिमानी है।
2. **दृढ़ चरित्र** – अमरकांत का व्यक्तित्व दृढ़ है। सकीना से आकर्षण उत्पन्न होने पर भी वह अपने सामाजिक मर्यादा से बंधा हुआ, देश के प्रति संकल्पी होता है। जिस बात को ठान लेता है, उसे पूरा करता है। इसका उदाहरण मुन्नीबाई को जेल से छुड़वाना तथा पिता के मना करने पर भी जुलूसों में भाग लेना वह नहीं छोड़ता।
3. **सहृदय व्यक्ति** – अमरकांत सहदय हैं वह अपनी पत्नि के प्रति निष्ठावान है, उसका मन सकीना की गरीबी को देखकर भी पिघलता हैं उसे समय-समय पर पत्नि की फिक्र रहती है।
4. **ईमानदार** – उपन्यास का नायक ईमानदार हैं वह कालेखाँ जैसे कालाबाजारी व चोरी का सोना बेचने वाले से सख्त नफरत करता हैं उसकी दृष्टि में ऐसे ही लोग अपने देश के साथ धोखाधड़ी करते है। वे ईमानदारी की मिसाल कालेखाँ को धक्के मारकर निकालने में प्रयुक्त करता है। तथा सारा माल लेने के विरोध में पिता से भी झगड़ा करता है।
5. **गांधीवादी विचारधारा** – अमरकांत गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं वह समय-समय पर अंग्रेजी के खिलाफ आंदोलन करता है तथा स्वदेशी को अपनाता है। खादी के कपड़े पहनता है, तथा स्वयं सूत कातकर कपड़ा बुनता हैं और गली-गली में जाकर कपड़े बेचकर अपनी आजीविका चलाता है।
6. **सच्चा देशभक्त** – अमरकांत एक सच्चा देशभक्त हैं जो अपने देश के लिए प्राणों का बलिदान देने को तैयार है। इसका प्रमाण देश के लिए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई हैं वह सामाजिक कुरीतियों को जड़ से समाप्त कर देना चाहता हैं देश भक्ति की भावना, उसमें कूट-कूट कर भरी है।
7. **सत्यवादी** – अमरकांत, सत्यवादी नायक है। जो हमेशा सही (सच) का साथ देता है। कालेखां द्वारा चोरी का माल दुकान में लेने पर उसे भला-बुरा कहकर उसे दुकान से बाहर निकाल देता हैं वही दूसरी ओर मुन्नीबाई का साथ देकर उसे जेल से रिहा करवा लाता है।
8. **भावुक एवं अस्थिरचित्त**– अमरकांत भावुक स्वभाव का व्यक्ति है। उसमें समाज के लोगों की परेशानियाँ देखी नहीं जाती और वह उनकी मदद को पहुँच जाता हैं। इसका उदाहरण गॉव की अछूत जनता को उनके अधिकारों को दिलवाना है।
9. **कर्मठ** – अमरकांत कर्मठ (बहुत मेहनती) कार्यकर्ता है। वह अपना कार्य पूरी ईमानदारी के साथ पूर्ण करता है। प्रोफेसर शांति कुमार द्वारा उसे अनेक आंदोलनों में सहयोगी बनाया जाता है।

अतः अमरकांत आदर्शपात्र के रूप में हमें दिखाई देता है। यह उपन्यास का सबसे अधिक प्रभावित करने वाला पात्र है। लेखन ने इस पात्र के माध्यम से एक देशभक्तिपूर्ण उपन्यास की रचना की।

सुखदा का चरित्र चित्रण –

उपन्यास की दूसरी पात्र तथा नायक की पत्नि सुखदा है। उपन्यास में इसका चरित्र एक आदर्शवादी पत्नि के रूप में किया गया है। सुखदा जो विलासी होने के बाद भी अपने परिवार के प्रति तथा देश और समाज के प्रति समर्पित रहती हैं उपन्यास में उसकी भूमिका अमरकांत की पत्नि के रूप में है। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर अपने भारतीय

होने का परिचय देती हैं, अर्थात् अमरकांत के साथ रहकर उसमें भी देशभक्ति की भावना जाग्रत हो जाती है। उपन्यास में उसे एक आदर्शवादी स्त्री के रूप में लेखक ने प्रस्तुत किया है।

1. **स्वाभिमानी** – सुखदा एक स्वाभिमानी स्त्री है, जो अपने पति का अपमान सहन नहीं करती है, तथा अमरकांत के घर छोड़ जाने पर उसका साथ देती है। वह देश की ऐसी हिन्दु स्त्री हैं जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जानती है। इसकी भूमिका के द्वारा लेखक समाज की स्त्रियों में इन भावनाओं को जागृत करना चाहते है।
2. **कर्तव्य निष्ठ** – सुखदा अपने कर्तव्यों के प्रति सजग है। वह न केवल अपने परिवार के प्रति कर्तव्यों को पूरा करती हैं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर समाज और राष्ट्र के प्रति भी अपने कर्तव्यों को पूरा करती है। वह अछूतों के उद्धार के लिए आंदोलन की सूत्रधार रहती है।
3. **विलासी** – चूंकि सुखदा भरे पूरे संपन्न परिवार से रहती हैं, तथा विवाह के बाद उसे कंजूस और लालची ससुर अमरकांत के घर रहना पड़ता हैं वह अभी आवश्यक उपयोग की वस्तुओं की आदि होती है। तथा उसका शौक गहनों का होता है। अमरकांत के द्वारा उसकी और ध्यान नहीं दिया जाता। इसीलिए वह बार-बार अपनी मॉ के यहॉ जाने के लिए अमरकांत को प्रेरित करती है।
4. **कर्मठ** – सुखदा कर्मठ नारी हैं वह अपने देश से सारी सामाजिक समस्याओं को मिटा देना चाहती है। सभी को सम्मान दिलाना उसका मुख्य उद्देश्य है। इसीलिए वह आंदोलन में भाग लेकर अपने कर्मठता का परिचय देती है।
5. **वाक् चातुर्य** (बोलने की कला में माहिर) – सुखदा बोलने की कला में निपूर्ण है। वह अपनी वाक् कला द्वारा गरीब अछूतों के लिए उनके हक की बात जन-जन (जनता) तक पहुँचाती है।
6. **सुन्दर** – सुखदा आकर्षक व्यक्तित्व वाली नारी है। उसके जैसे गुण है, वैसे ही कर्म भी है। वह अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से सबको प्रभावित कर लेती है।
7. **पतिव्रता/सहधर्मणी** – सुखदा भारतीय संस्कृत नारी है। वह अपने पति का साथ अंत तक देती हैं यहॉ तक की अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन चलाने में अमरकांत और सुखदा को जेल तक हो जाती है। किंतु वह विपरित परिस्थितियों में अपने पति का साथ नहीं छोड़ती। वह अपने पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए अमरकांत के रास्ते को ही अपना लेती है।
8. **भावुक/सहृदय** – सुखदा का हृदय कोमल है। वह अमरकांत और पिता के बीच होने वाले झगड़ों को सहन नहीं कर पाती है। उससे नैना का दुख भी नहीं देखा जाता। वह समाज के अन्य लोगों के लिए भी परेशान रहती है तथा हट करके अपने लक्ष्य को पा लेती है।

9. आनंदमठ (बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय)

आनंदमठ उपन्यास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

आनंदमठ उपन्यास लेखक बंकीमचंद चटोपाध्याय द्वारा रचित एक देशभक्तिपूर्ण उपन्यास हैं जिसमें लेखक ने परतंत्र भारत की स्थितियों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। आनंदमठ उपन्यास एक सशस्त्र आन्दोलन को प्रस्तुत करता है। यह आन्दोलन शक्ति का संचय कर अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांति का सूत्रकार करता है। यह उपन्यास इतिहास की तीन महत्वपूर्ण घटनाओं को आधार बनाकर लेखक ने इस उपन्यास की कहानी को रचा है। बंगाल में पड़ने वाला अकाल बंगाल की क्रूर शासक मीर जाफर की तानाशाही तथा महाराष्ट्र के क्रांतिकारी नवयुवक वासुदेव बलवंत फड़के की गिरफ्तारी तथा उनके आजीवन कारावास की घटना ने लेखक को इस कहानी की लिखने के लिए प्रेरणा दी। इस उपन्यास में मुस्लिम शासन के पतन तथा अंग्रेजी शासन के उदय को दर्शाया गया है। इस उपन्यास का मुख्य संदेश अत्याचार के विरूद्ध शक्ति-साधना कर सशस्त्र आन्दोलन चलाना। लेखक ने इन ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर मीर जाफर जैसे शासकों से मुक्ति पाने के लिए देश में इस तरह के क्रांतिकारी संगठन बनाए तथा इस उपन्यास के माध्यम से इस मातृभूमि की रक्षा हेतु प्रत्येक नवयुवक अपना बलिदान दे इस हेतु देश की जनता को जागृत किया।

आनंदमठ उपन्यास बंगाल के पद्चीन नामक गॉव में पड़ने वाले अकाल की स्थितियों पर लिखा गया है। महेन्द्र इस उपन्यास का मुख्य पात्र है। देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक नवजवान मिलकर एक संगठन स्थापित करते है जिसे मठ का रूप दे दिया जाता है आनंदमठ में इन्हें संतान कहकर पुकारा जाता है। अकाल की स्थितियों को झेलते हुए महेन्द्र और उसकी पत्नि कल्याणी तथा बेटी तीनों जब घर त्याग कर शहर की ओर जाते हैं तब कुछ अप्रत्याशित घटनाओं के कारण महेन्द्र अपनी पत्नि और बच्चों से बिछड़ जाता है। सूखा, अकाल और भूखमरी की स्थितियों में लोगों ने नैतिकता त्याग दी है। पेट की भूख गलत कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। कल्याणी ऐसे ही कुछ डाकुओं के बीच मुसीबत में फंस जाती हैं तथा पति को न पाने के कारण विचलित रहती है। डाकू सारा धन लूटकर उसे अज्ञात स्थान पर छोड़कर चले जाते है। मानसिक संतुलन खोने के कारण कल्याणी आत्महत्या का प्रयास करती हैं तभी संतान के रूप में भवानंद उसे बचा लेता है। उधर महेन्द्र भी अनेक स्थानों पर पत्नि को ढूंढते-ढूंढते अंग्रेजों के चंगुल में फंस जाता है उन्हें सत्यानंद द्वारा बचाकर आनंदमठ में रखा जाता है। यह उपन्यास सन्यासियों के भेष में देश में उन क्रांतिकारियों नवयुवकों का संगठन हैं जो देश को किसी भी कीमत पर आजाद करवाना चाहते है।

वे अपनी शक्ति को इकट्ठा कर रात के अंधेरे में 'जय जगदीश' की पंक्तियों को दोहराते हुए एक बहुत बड़े समुदाय को इकट्ठा कर आन्दोलन की रूपरेखा बनाते हैं जिसमें उनका निशाना सीधे-सीधे अंग्रेज होते है। दो बार अंग्रेजों के साथ मुठभेड़ होती है।

आनमंदठ उपन्यास का एक और पात्र जीवान्द और शांति की कहानी के माध्यम से उपन्यास को अधिक सार्थकता मिलती है। उस समय के पश्चात् शांति से तंग आकर जीवान्द परिवार को छोड़कर आनंदमठ में आकर रहने लगता हैं तथा संतान व्रतधारी बन जाता है।

अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ते-लड़ते अपने को शहीद करते जाते हैं। उपन्यास में एक परिवर्तन आता हैं, भवानंद कल्याणी की सुंदरता पर मुग्ध होता हैं, कल्याणी को विवाह प्रस्ताव देता हैं किंतु कल्याणी द्वारा पतिव्रता होकर मना कर दिया जाता है। भवानंद को ग्लानि होती हैं और वह आत्महत्या करने की सोचता हैं किंतु दूसरे क्षण देश के प्रति जो समर्पण का भाव घूमने लगता हैं और वह निश्चित करता हैं कि अंग्रेजों के साथ मुठभेड़ में वह अग्रणी रहकर अपने प्राणों का बलिदान देगा। उधर जीवानंद और शांति के एक साथ आनंदमठ में रहने तथा शांति का नवीनानंद के रूप में प्रवेश भवानंद का संतान व्रत का भी उसे आत्महत्या करने पर मजबूर करता हैं किंतु वह भी सच्चे देश भक्त की तरह इस देश के प्रति अपने प्राणों का समर्पित करने का प्रण करता है। दो बार अंग्रेजों के साथ मुठभेड़ होती हैं जिसमें संतान 'जय-जगदीश' के नारे लगाते हुए अंग्रेजों को पूरी शक्ति के साथ परास्त करते हैं तथा एक भी अंग्रेजी सैनिक को नहीं बख्शते इस मुठभेड़ में अंग्रेजी अधिकारी सर टोमस रो मारे जाते है। द्वितीय लड़ाई में सभी सैनिक मारे जाते हैं तथा संतानों की विजयी होती है।

10. राग दरबारी (श्री लाल शुक्ल)

श्री लाल शुक्ल का साहित्यिक परिचय -

आधुनिक काल का प्रारंभ होते ही केवल पद्य में ही नहीं, गद्य में भी हास्य-व्यंग्य लेखन की प्रवृत्ति नहीं है। भारतेन्दु युग में जिन्दादिल लेखकों ने अपने नाटकों, प्रहसनों, निबंधों, कहानियों में सर्वत्र-व्यंग्य की ऐसी सुरूचिपूर्ण एवं समाजोपयोगी सृष्टि की कि लगता ही नहीं कि हिन्दी में हास्य-व्यंग्य की कमी है। परन्तु द्विवेदी-युग और परवर्ती कालों में यह धारा पुनः क्षीण हो गई। उनका पुनरूद्धार करने का श्रेय है, विगत तीस-चालीस वर्ण के लेखकों को। उनमें श्रीलाल शुक्ल का स्थान उल्लेखनीय है।

श्रीलाल शुक्ल का जन्म उत्तरप्रदेश में सन् 1925 में हुआ था। वहीं उन्होनें शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् नौकरी की। समकालीन कथा साहित्य मे अपने निस्संग साथ में जुड़े हुए व्यंग्य के लिए विख्यात श्री शुक्ल ने अपनी व्यंग्य-रचनाओं के द्वारा समाज की सडी-गली रूढ़ियो और परम्पराओं पर भी आघात किया है। वर्तमान युग में धुन की तरह लगी व्याधिक-भ्रष्टाचार, राजनीति, प्रशासन में भाई-भतीजावाद प्रजातंत्र के खोखलेपन और देश सेवा के नाम पर

निहित स्वार्थों में संलग्न राजनेताओं की काली करतूत पर भी व्यंग्य कर इसके कारणों पर प्रकाश डाला है और इनके भयावह परिणामों के प्रति सचेत किया है। एक समझदार के लिए यही पर्याप्त है।

इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं, सूनी घाटी का सरूज (1956), अज्ञातवास, सीमाएँ टूटती हैं, मकान, आदमी का जहर, पहला पड़ाव और राम दरबारी (1968) अंगद का पॉव (1958), यहाँ से वहाँ, उमराव नगर में कुछ दिन (व्यंग्य लेख)।

राग दरबारी को 1970 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। दूरदर्शन पर भी यह धारावाहित रूप में प्रसारित हो चुका है। हिन्दी के कतिपय उपन्यासों में से एक हैं, जिसका लगभग सभी भारतीय भाषाओ में अनुवाद हो चुका है।

कथानक –

'राग दरबारी' के लेखक का उद्देश्य कहानी कहना नहीं, मानव मन की ग्रंथियों, कुंठाओं और मानसिक उथल-पुथल को चित्रित करना नहीं, समकालीन जीवन का दस्तावेज प्रस्तुत करना है। कथानक, पात्र, परिवेश सभी दस्तावेज के साधन बनकर आते है। वह बताना चाहता हैं कि देश राजनीति के बलात्कार से कलंकित हुआ है। जिन्दगी का दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए उसने कुछ संस्थाओं को केन्द्र में रखा है। ये संस्थाएँ है – कॉलेज, सहकारी संघ, ग्राम-पंचायत और न्यायपालिका।

जैनेन्द्र ने अपने उपन्यास 'सुनीता' की भूमिका में लिखा था कि कहानी कहना उनका उद्देश्य नहीं है। यही बात श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' के विषय में भी कही जा सकती है। जैनेन्द्र कहानी के सूक्ष्म सूत्र द्वारा पात्रों के मन की ग्रंथियों, कुंठाओं, अंतर्गत एवं उथल-पुथल का विवेचन, विश्लेषण करना चाहते थे, श्रीलाल शुक्ल भी कहानी के ताने-बाने द्वारा समकालीन जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय, विसंगतियों और विद्रूपताओं की पर्त-दर-पर्त उखाड़ कर पाठक का मोह भंग कर उसे यथार्थ की कटुता से परिचित कराना चाहते है, उसके मन में विक्षोभ उत्पन्न करना चाहते है ताकि स्थिति के प्रति जागरूक होकर कुछ करने की इच्छा पैदा हो। इस भ्रष्टाचार का केन्द्र हैं शिवपालगंज नामक कस्बा और उसके अधिपति वैद्यजी की जो पहले कभी वैद्यक द्वारा जीविकापार्जन करते थे वह उस व्यवसाय को तुच्छ समझ देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व को अधिक महत्व देकर जनता जनार्दन की सेवा में लग गए है। सत्ता का मोह जैसे-जैसे बढ़ता गया, उनकी कूटनीति और षड़यंत्र शक्ति भी बढ़ती गई और उन्होनें सत्ता के तीनों सूत्रों – कॉलेज, को-ऑपरेटिव संघ, तथा ग्राम-सभा पर अपना अधिकार जमा लिया। यही वैद्यजी उपन्यास के मुख्य पात्र हैं और उन्हीं को केन्द्र में रखकर उपन्यास की कथावस्तु का ताना-बाना बुना गया है। उपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में इस प्रकार है –

उपन्यास का प्रारंभ वैद्यजी के भांजे रंगनाथ के नगर से शिवपालगंज आने से हुआ है। जो अपने शोधकार्य एवं स्वास्थ्य को सुधारने यहाँ आया है। जहाँ ट्रक ड्राइवर से यातायात पुलिस अधिकारी द्वारा घूस लेने का वर्णन है। शिवपालगंज में एक थाना भी है। जहाँ की साजोसामान मध्यकालीन हैं एक आदमी अपनी चालान के लिए कह रहा हैं परन्तु उसकी बात नहीं सुनी जाती है। उसी समय वैद्यजी का छोटा बेटा रूपान जो दसवीं कक्षा में तीन साल से अटका, छात्र-नेता तथा रंगीली तबीयत का था, थाने में आया। एक गुमनाम चिट्ठी जो गॉव के प्रतिष्ठित व्यक्ति रामाधीन भीमखेड़वी के पास पाँच हजार रूपए की मांग की गई, का उल्लेख करता है। थानेदार आश्वासन देता हैं कि डाकुओं से निपट लिया जाएगा।

शिवपालगंज में एक कॉलेज हैं जिसका नाम छंगालाल है। अपना नाम अमर करने के लिए डाक बंगले की जमीन को हथिया कर कॉलेज स्थापना की थी। इसकी पूरी रूपरेखा एवं यहाँ के पढ़ाने वाले मास्टरों की कार्य नीति पर अच्छी तरह अपनी व्यंग्य शैली शुक्ल जी चलाते है। गुटबाजी चुनाव बाजी, प्रबंध समिति, प्रिंसीपल की कार्यनीति, मास्टरों के पढ़ाने की नीति पर यहाँ अच्छा व्यंग्य हैं। मास्टर मोतीराम पढ़ाने में कम अपनी आटा चक्की में ज्यादा ध्यान देते है। विज्ञान को भी चक्की के माध्यम से समझाते थे। और चक्की पुरानी होने के कारण जब देखो बंद हो जाती, जैसे ही शुरू होती कक्षा छोड़कर भाग जाते। मोतीराम प्रिंसीपल समर्थक थे, अतएव मालवीय को कक्षा पढ़ाने को

कहा। उनके न कहने पर उन्हें मास्टर खन्न के दल का कहा। खन्ना इतिहास के लेक्चरार थे। बच्चों को इसमें रूचि नहीं थी, वे क्लास में तरह-तरह की पत्र-पत्रिकाएँ और जासूसी किताबे पढ़ते थे। एक बच्चे को पढ़ते देख खन्न मास्टर को डाटते हुए वैद्यजी के घर गए।

वैद्यजी का गॉव के हिसाब से आलीशान मकान था। यही उनका दरबार लगता था जिसके मुख्य सदस्य थे कॉलेज के प्रिंसीपल उनके दो बेटे बद्री पहलवान और सप्पन बाबू, सनीचर जिसका मुख्य कार्य भांग घौटना तथा दरबारियों को भांग पिलाना था। रंगनाथ को यही सबका परिचय मिलता है। साथ ही वैद्यजी का पूर्ववृत्त भी बताया गया। स्वतंत्रता मिलने से पहले और बाद में क्या-क्या सेवाएँ देश के लिए की। इसी समय भी वे कॉलेज का मैनेजर को-ऑपरेटिव सोसायटी के डायरेक्टर तथा अपनी औषधियों से नवयुवक रोगियों की सेवा कर रहे है। 62 वर्ष के होने के बाद भी वे बूढ़े नहीं है।

न्याय व्यवस्था के व्यंग्य को उभारने के लिए लंगड जैसे पात्र का चित्रण किया है। सात वर्ष पहले उसने दीवानी अदालत में मुकदमा दायर किया था, किंतु एक दस्तावेज की नकल प्राप्त करने हेतु, किन्तु बिना रिश्वत के उसे आज तक नकल नहीं मिली। वह इस बात पर अड़ा था कि गैर-कानूनी काम नहीं करेगा और नकल बाबू रिश्वत लिए बिना कोई न कोई कानूनी अड़चन निकाल कर उसकी अर्जी खारिज कर देता। गाँव में को-ऑपरेटिव सोसायटी में सुपरवाईजर द्वारा गबन की बात भी जोरों पर है।

वैद्यजी का बड़ा बेटा बद्री पहलवान, पहलवान होने के साथ गुंडों का भी अभिभावक था। गॉव के साथ-साथ नगर के लोगों की भी सेवा करता था। एक अन्य पात्र रामाधीन भीखखेड़ा भी शिवपालगंज का खास आदमी था, जिसका गॉव पंचायत पर पूरा अधिकार था। कहने को उसका भाई सभापति था, किंतु सारा अनैतिक कार्य वहीं करता था, वैद्यजी उसके प्रतिद्वंदी थे।

रंगनाथ एक बुद्धिमान युवक था। कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक लगा पश्चात् उसे गॉव और गॉव वाले, विशेषतः वैद्यजी और उसके दरबारियों के कारनामें अखरने लगे। गॉव के डाकू दुरबीन सिंह के बारे में भी शनीचर रंगनाथ को बताता है।

शिवपालगंज कहने को तो गाँव था परंतु शहर के निकट होने के कारण तथा सड़क किनारे होने से बड़े-बड़े राजनेता तथा अफसर आते रहते थे तथा बड़े-बड़े भाषण देकर चले जाते थे। विज्ञापन के लिए भी यह अच्छी जगह थी। जोगनाथ जैसे शराबी का भी यहॉ वर्णन हैं जो वैद्यनाथ जी का आदमी है।

को-ऑपरेटिव सोसायटी में गबन भी वैद्यजी ने ही कराया। पोल खुलने पर वैद्यजी तो साफ बच गए सारा दोष सुपरवाईजर पर लगा। इसी तरह धंगामल इन्टरकॉलेज भी गुटबंदी से मुक्त नहीं था। जिसमें एक के नेता वैद्यजी और दूसरे के रामाधीन भीखगखेड़वी। गॉव की सभी छोटी बड़ी घटनाएँ वैद्यजी और उनके बेटों से जुड़ी है और वहीं हल भी करते है। छोटे पहलवान के परिवार का हल भी इन्हीं के पास है। शिवपालगंज में गयादीन नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी थे। जो कॉलेज प्रबंधक समिति के उपाध्यक्ष थे। उन्हें इस काम में कम अपने व्यवसाय में ज्यादा रूचि थी। उनकी बेटी बेला, जिस पर रूप्पन महोदय फिदा थे।

शिवपालगंज में एक गॉव सभा थी, उसके प्रधान थे रामाधीन भीखमखेड़वी के चचेरे भाई थे। इसकी तरफ वैद्यजी का कोई आकर्षण नहीं था। किंतु एक समय पेपर में प्रधानमंत्री द्वारा गॉव-सभा पर कुछ पढ़ा, तो उसकी तरफ उनका ध्यान गया। गॉव सभा के चुनाव कराकर शनिचर को उसका प्रधान बना दिया। शिवपालगंज के मेलें का भी अच्छा वर्णन किया गया है। जहॉ गुण्डा तत्वों की कार्य नीति पर अच्छा व्यंग्य किया है। न्याय पंचायत भीखमखेड़वी का भी अच्छा व्यंग्यात्मक चित्र खींचा गया है।

एक सपने के तहत वैद्यजी कॉलेज में पुनः चुनाव कराने के लिए तैयार होते है। लाठी के बल से वैद्यजी पुनः मैनेजर चुन लिए गए। रंगनाथ शिवपालगंज की घटनाओं से क्षुब्ध हो उठा था। उसकी आत्मा उसे कचोट रही थी लेकिन कोई भी यहॉ उसका हमदर्द नहीं था। कॉलेज मैनेजर के चुनाव से लेकर कुछ मेम्बरों ने शिक्षामंत्री के पास लिखित शिकायत भेजी। जॉच के लिए डिप्टी डायरेक्टर के आने की खबर से प्रिंसीपल अफसरों का स्वागत करने और कॉलेज की साज-सज्जा में जुट गए। अधिकारियो के आने पर अधिकारी ने भी भाषणबाजीं शुरू कर दी। गयादीन के

यहाँ चोरी जोगना ने की थी पर वैद्यजी का आदमी होने से वह पकड़ा नहीं गया था। रामाधीन ने दरोगाजी से मिलकर इसका बदला लिया। बाद थानेदार का तबादला ले गया।

जंगल में कॉस गांठ लगाने अर्थात् हनुमानजी की गांठ लगाई, जैसे अंधविश्वास के प्रसंग भी है। महिपाल पुर वाली तरकीब से शनिचर प्रधान पद का चुनाव जीत गया। इधर बद्री पहलवान बेला से शादी करना चाहता है।

गाँव की अनेक घटनाओं को देखने के बाद रूप्पन को असलियत का पता लगने लगा था। कई लोग उसके पिता को अपना हथकंडा बनाकर काम सिद्ध कर रहे थे। जैसे प्रिंसीपल खन्ना मास्टर, उसका भाई रंगनाथ भी गाँव के हालात देख विक्षुब्ध था। वैद्यजी गाँव की हवा को मोड़ते हुए बद्री बेला का विवाह करने को तैयार हो गए।

प्रधान बनने के बाद शनिचर ने किराने की दुकान खोल ली। यहाँ को-ऑपरेटिव यूनियन के नए सुपरवाईजर ने स्टोर खोलने की बात कही।

रंगनाथ गाँव की राजनीति को देखकर वापस शहर जाना चाहता है। विभिन्न आरोपों के कारण वैद्यजी चिंता में थे। बद्री पहलवान उनकी समस्याओं का निदान बता देते है। अपने को बचाने के लिए शहर के हर अधिकारी से मिल आए, परंतु कोई हल नहीं निकला। सिर्फ एक ही हल निकला कि वे अपने पद से त्यागपत्र दे देवे। को-ऑपरेटिव यूनियन का सालाना जलसा हुआ जिसमें वैद्यजी ने भाषण दिया कि गबन नहीं अपव्यय हुआ था, फिर भी मैं त्याग पत्र दे रहा हूँ। एक कूटनीतिक तरीके से बद्री पहलवान को उसका अध्यक्ष बना दिया गया। गयादीन ने वैद्यजी के बेटे बद्री पहलवान से अपनी बेटी बेला की शादी करने से साफ मना कर दिया। खन्ना मास्टर तथा उसके साथियों ने प्रिंसीपल पर मुकदमा दायर किया, तो न्यायाधीश ने उन दोनों ही पक्षों को डाटा। रंगनाथ ने इसके लिए गयादीन से सहायता लेने को कहा पर उसने अस्वीकार कर दिया। परीक्षा में नकल पकड़ते के लिए खन्ना मास्टर ही दोषी ठहराए गए। रंगनाथ और रूप्पन इस समय समस्त गलत कार्यों के विरोध में आवास उठाने लगे। डिप्टी डायरेक्टर जाँच के लिए आने वाले थे, किंतु चार बजे तक नहीं आए दोनों पक्षों के लोग इंतजार करते ही रह गए। वैद्यजी ने खन्ना और मालवीय से त्याग पत्र मांगा। रूप्पन को अपनी जमीन-जायदाद में से कुछ न देने की घोषणा की।

इन सब घटनाओं को देखने के बाद रंगनाथ वापस शहर जाने की तैयारी करने लगता हैं तभी प्रिंसीपल आते है, और खन्ना मास्टर के रिक्त स्थान पर कार्य करने को कहते है। रंगनाथ के यह कहने पर कि खन्ना मास्टर को कैसे निकाला हैं तो आखिरी व्यंग्य प्रिंसीपल के माध्यम से लेखक यह कहने से भी नहीं चूँकता ''बाबू रंगनाथ, तुम्हारे विचार बहुत उँचे हैं, पर कुल मिलाकर तुम गधे हो''।

इस प्रकार 'राग दरबारी' में अनेक प्रसंग है। ये कथानक की अनिवार्य कड़ी न होते हुए भी समकालीन जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार और गिरते नैतिक मूल्यों की राजीव एवं विक्षोभकारी तस्वीर पेश करते है। लेखक ने परम्परागत ढंग से कथा प्रस्तुत नहीं की है, क्योंकि उसका उद्देश्य कथा कहना नहीं, शिवपालगंज की सामूहिक मानासिकता का उद्घाटन करना तथा उसके माध्यम से पूरे समाज में व्याप्त विसंगतियों का दिग्दर्शन कराना था। दस्तावेज और कथा दोनों का अद्भुत सम्मेलन करना सरल कार्य नहीं है, पर लेखक ने यह कठिन कार्य बड़ी कुशलता से संपन्न किया है।

पात्रों का परिचय -

'राग दरबारी' में तीन प्रकार के पात्र है - शोषक जैसे - वैद्यजी और उनके दरबार के सदस्य, शोषित जैसे - खन्ना मास्टर और सहयोगी या संगड़ और शोषितों के प्रति सहानुभूति रखने वाले पर अकर्मण्य समझौतावादी जैसे गयादीन और पलायन संगीत का आश्रय लेने वाले बुद्धिजीवी रंगनाथ। राग दरबारी, अन्य उपन्यासों (पहले के और आजकल दोनों के) से इस बात से भिन्न हैं कि इसमें नारी-पात्रों की भूमिका नगण्य है। हल्का सा रोमांस का पुट देने की चेष्टा अवश्य की गई हैं पर वह कोई ठोस रूप धारण नहीं करता। बेला उसकी बुआ, आम समाजसेविका का उल्लेख मात्र है, उन्हें सक्रिय भूमिका प्रदान नहीं की गयी। इसका परिणाम यह हुआ हैं कि नारी जीवन और नारी समस्याएँ उपेक्षित ही रह गई है।

'राग दरबारी' के पात्र स्थिर पात्र हैं, गतिशील नही। उनके चारित्रिक गुण-दोषों में कोई परिवर्तन नहीं आता। वैद्यजी और प्रिंसीपल ही नहीं खन्ना मास्टर, रूप्पन तथा बद्री और रंगनाथ भी जेसे आरंभ में थे अन्त तक वैसे ही

बने रहे। रंगनाथ में विकास की संभावनाएँ थी, परिस्थितियों में पढ़कर उसमें विद्रोह की क्षमता एवं धार के विरूद्ध चलने की तत्परता दिखायी जा सकती थी परन्तु बुद्धिजीवियों की कलाई खोजने के चक्कर में लेखक ने यह अवसर ही खो दिया।

श्रीलाल शुक्ल ने पात्रों का नामकरण उनके सामाजिक स्तर, उनकी शारीरिक क्षमताओं और उनके स्वभाव को ध्यान में रखकर किया है, साथ ही इस नामकरण के पीछे व्यंग्य भी दिया है, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आए समस्त पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार है -

वैद्य जी -

1. महत्वपूर्ण पात्र या नायक
2. बहुमुखी व्यक्तित्व
3. पुराना पेशा वैद्य का
4. बगुला भगत राजनेता
5. शिवपालगंज के तीन शक्ति केन्द्र - कॉलेज, को-ऑपरेटिव यूनियन और ग्राम पंचायत के मैनेजर, मैनेजिंग डायरेक्टर और प्रमुख।
6. भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्यों में उनका हाथ।
7. प्रत्येक क्षेत्र में वैद्यजी की पकड़ सर्वग्रासी।
8. अवसरवादी
9. गॉव सभा, सहकारी संघ तथा कॉलेज तीनों को अपनी जागीर।
10. बेटे बद्री पहलवान को सौंपना।
11. पुरूष भ्रष्ट, निहित स्वार्थों वाली राजनीति के निदेशक।
12. वैद्यजी के निर्देशन में सारे कार्य
13. ठंडा दिमाग स्थित प्रज्ञता
14. कुतर्क के तर्क में डालने की कला।
15. गिरगिट की तरह रंग बदलने की नीति।

सारांश यह हैं कि वैद्यजी उन राजनेताओं के प्रतीक है जिन्होनें अपने काले कारनामों से जनतंत्र और जनतांत्रिक शासन व्यवस्था को विकृत और विद्रूप बना दिया है, जिन्होनें जनतंत्र का लबादा औढ़कर तथा जनता की सेवा की पट्टी माथे पर चिपकाकर जनता की ऑखों में धूल झोंकी है, जनता का शोषण किया है। चुनाव जीतने के नाना हथकंडे अपना कर ये चुनाव जीतते हैं और एक बार सत्ता पाने के बाद कुर्सी से आजीवन चिपके रहने के लिए नई-नई तरकीबे निकालते है और जब तक सत्ता में रहते हैं अपने भाई-भतीजों को सुस्थापित करने की जी-जान से चेष्टा करते है। कोई साधन इनके लिए अछूता नहीं है।

प्रिंसीपल -

1. जी हुजूर प्राचार्य
2. वैद्यजी के दरबार के प्रमुख दरबारी
3. चापलूस
4. दो गुणों के लिए विख्यात - फर्जी हिसाब-किताब बनाकर कॉलेज के लिए अधिक से अधिक सरकारी ग्रांट लेना और क्रोध की चरमावस्था में अवधी भाषा में गालियॉं देना।
5. कॉलेज सत्ता का केन्द्र।
6. विरोधी अध्यापकों को हंसने की कोशिश में रहना।
7. गुटबाजीं के प्रमुख संचालक

8. कॉलेज को निजी फैक्ट्री मानना।
9. अपनी टेक पर अड़े रहना।
10. शत्रु को अप्रत्यक्ष रूप से पछाड़ने की कला में निपुण।

इस प्रकार छंगामल इंटरकॉलेज के प्रिंसीपल उन धूर्त, तिकड़मी, जालसाज प्रधान अध्यापकों के प्रतिरूप हैं जिनके कारण देश की शिक्षा व्यवस्था, विद्यालय और अध्यापक बदनाम हो रहे हैं और देश नैतिकता तथा बौद्धिक विकास के क्षेत्र में समतल की ओर जा रहा है।

बद्री पहलवान –

1. वैद्यजी का बेटा
2. पिता का सलाहकार एवं षड़यंत्रों का सहयोगी
3. गॉव में गुंडागर्दी को फैलाने वाला
4. असादे के माध्यम से कुश्तियॉ कराकर मनोरंजन
5. लाठी और गुंडागर्दी से कार्य करना
6. रिश्वत में काम कराने की कला
7. पहलवान होने के सभी गुण एवं शौक
8. व्यवहार भी फक्कड़ पहलवान की तरह
9. छोटे भाई रूप्पन को निराबुद्धू समझने वाला
10. लैला के आशिक
11. जूते-लाठी के बल पर शासन।

इस प्रकार ब्रदी पहलवान आज की भ्रष्ट राजनीति और गुंडागर्दी के माहौल में पनपने वाले उन शोधों का प्रतिनिधि हैं जो अपनी और अपने पालक बालकों की सहायक से हर संकट और समस्या को लाठी के बल पर हल करने के लिए प्रस्तुत रहते है।

रूप्पन बाबू –

1. रंगीला छात्र नेता
2. वैद्यजी का छोटा बेटा 18 वर्षीय
3. दसवीं में लगातार तीन वर्षों से अध्ययन
4. स्थानीय नेतागिरी
5. पैदायशी नेता (पिता भी नेता, भाई भी नेता)
6. शक्ल से मरियल किन्तु पहराना में छैला बाबू
7. गुंडागिरी और नेपापन का अद्‌भुत सामंजस्य
8. समदृष्टि का गुण
9. रोब-दौब से काम करवाने की कला
10. गांव के कल्याण की चिन्ता
11. किशोर होने के कारण छैला का रूप भी (बेला को प्रेमपत्र लिखना)
12. मदिरा-सेवन की भी आदत
13. दूरदर्शी और कूटनीतिज्ञ भी
14. उतावलापन अधिक

15. इच्छा-पूर्ति न होने से कुंठित

इस प्रकार उपन्यासकार ने रूप्पन माध्यम से सामाजिक और मनौवैज्ञानिक सत्य को रेखांकित किया है। एक ओर उसके पूर्व वृत्त द्वारा युवा गुंडे छात्र नेताओं की सच्ची छवि दिखाई हैं और दूसरी ओर उसके विद्रोह का कारण कुण्ठा और निराशा बताकर मानव मनोविज्ञान के रहस्य जानने की क्षमता का परिचय दिया है।

सनीचर –

1. वैद्यजी के दरबार का विदूषक
2. असली नाम मंगल
3. अधिकांश समय भांग घोटना तथा मूर्खतापूर्ण बातें कर लोगों का मनोरंजन करना
4. वैद्यजी रूपी कलियुगी राम का अनन्य भक्त हनुमान
5. मानव कम पशु अधिक
6. कायर होने पर भी मक्कार
7. मंगल अर्थात् शिवपालगंज की चाण्डाल चौकड़ी का सक्रिय सदस्य
8. अयोग्यताओं को खुले आम स्वीकार करने का गुण
9. गॉव सभा का प्रधान
10. दुकान खोलना
11. वैद्यजी का उपकृत

सनीचर की चरित्र सृष्टि कर वस्तुतः लेखक का उद्देश्य यह बताना हैं कि सनीचर का प्रधान बनना मूर्खता का बुद्धि पर, अज्ञान का ज्ञान पर, अविवेक का विवके पर अनादर्श का आदर्श पर, गधे का इन्सान पर राज करना है। सनीचर की विजय लोकतांत्रिक परम्परा का मखौल उड़ाती है।

रंगनाथ –

1. वैद्यजी का भांजा
2. पढ़ा-लिखा, एम.ए. पास, शोधकार्य में संलग्न
3. पढ़ने एवं स्वास्थ्य लाभ के लिए गाँव आना
4. ग्रामीण संस्कृति से परिचय
5. गॉव के व्यक्तियों, विद्रप स्थितियों और घटनाओं को देश आश्चर्यचकित
6. विद्रोह भावना या न्याय-भावना को बढ़ावा नहीं
7. युवा पीढी का प्रतिनिधित्व के रूप में रंगनाथ का विद्रोह आत्म-केन्द्रित
8. नये सम्प्रदाय के प्रवर्तक बनने की सोच
9. निष्क्रिय, पलायनवादी, बुद्धिजीवी।

इस प्रकार लेखक ने समष्टि चेतना से कंटे हुए व्यष्टि (व्यापक, संसार) स्वार्थों की गेंडुरी में सिगटे, हाय-हाय करने वाले या भुन-भुनाने वाले बुद्धिजीवी के रूप में रंगनाथ का चरित्र उकेरा है, जो पलायन में ही बवंडर से मुक्ति पाने का मार्ग पाते है।

लंगड़ –

1. सत् के युद्ध में शहीद

2. असली नाम लंगड़ प्रसाद
3. सिद्धांतवादियों का प्रतीक
4. धर्म और सत्य की लड़ाई लड़ने वालों में
5. देश की न्याय-प्रणाली को धर्म और सत्य की प्रतिमूर्ति देखने वाला
6. स्वयं को ईमानदार
7. दुनिया (गांव वाले) उसे महामूर्ख, जाहिल और बेवकुफ
8. भाषावादी
9. विनय की लता, सिद्धी स्वभाव और मुँहफट

लंगड़ जैसे पात्र का निर्माण कर लेखक ने प्रचलित न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य किया हैं जो धर्म, सत्य, भाग्य कर्मफल के नाम पर ठगे जाते हैं पर विद्रोह नहीं कर पाते।

गयादीन –

1. आत्मकेन्द्रित समझौतावादी व्यक्तित्व
2. सूदखोर बनिया
3. कॉलेज की प्रबंध-समिति के उप सभापति
4. व्यवहार कुशल
5. परिस्थितियों के अनुसार कार्य
6. अनाचार को चुपचाप सहने की आदत
7. भाग्यवादी एवं निराशावादी भी

इस प्रकार लेखक ने गयादीन के माध्यम से हमारी उस मानसिकता को उजागर किया हैं जो परिस्थितियों से समझौता करने और चुपचाप सारे अनाचार और अनीति को सहने में ही अपना भला समझती है।

खन्ना मास्टर –

1. भुनभुनाता विद्रोही अध्यापक
2. इतिहास के प्राध्यापक
3. गाँवों के अध्यापकों जैसा रहन-सहन
4. प्रिंसीपल (प्रतिपक्ष) के विरोधी
5. वाइस-प्रिंसीपल से प्रिंसीपल बनने की चाह
6. प्रिंसीपल के साथ शीत-युद्ध की स्थिति
7. साम, दाम, दण्ड, भेद का सहारा कार्य करने में
8. कुटिल बुद्धि एवं मक्कारी प्रवृत्ति
9. सेर के आगे सवा सेर
10. व्यंग्य एवं अशिष्ट भाषा का प्रयोग

कुल मिलाकर खन्ना मास्टर मध्यमवर्गीय अध्यापक की तरह कायर, डरपोक और विवशता के कारण खून का घूँट पीकर रह जाने वाला मात्र बड़बड़ा कर, भुनभुना कर अपने को शांत करने वाला पात्र है।

रामाधीन भीकमखेड़वी –

1. दुर्बल प्रतिनायक
2. वैद्यजी का विपक्षी
3. भ्रष्ट राजनीति का प्रतीक
4. शिवपालगंज से मिला हुआ गांव भीकनखेड़ा का निवासी
5. कलकत्ता में अफीम का कारोबार
6. अफीम कानून के अंतर्गत गिरफ्तार
7. दो वर्ष के कारावास के बाद वापस गांव
8. भाई को गॉव पंचायत का सभापति
9. कुशाग्र बुद्धि और करामाती ताकत

उपन्यास में भीकनखेड़वी के चरित्र की झलक मात्र मिलती है, उसका पूरा चरित्र प्रस्तुत नहीं किया गया। वह गौण पात्र हैं जिसके माध्यम से लेखक ने समाज की वस्तुस्थिति की झलक मात्र दी है।

मास्टर मोतीराम –

1. अध्यापन व्यवसाय का कलंक
2. विज्ञान के मास्टर
3. साईड व्यवसाय अध्यापन
4. पढ़ाते समय उदाहरण भी आटा-चक्की के व्यवसाय से
5. अध्यापन में कम व्यवसाय में ज्यादा रूचि
6. आत्म-प्रशंसा और ईर्ष्या-द्वेष
7. वैद्यजी तथा प्रिंसीपल के चापलूस
8. कॉलेज की सेवा में तत्पर

लेखक ने इस पात्र के माध्यम से उन निकम्मेल, अयोग्य, स्वार्थी और चापलूस अध्यापकों का मजाकिया, खाका या व्यंग्य चित्र अंकित किया हैं जो अध्यापन जैसे पवित्र कार्य को व्यवसाय बनाकर अध्यापक जाति को कलंकित कर रहे है।

उपन्यास का नायक – शिवपालगंज के गंजहे ही नायक –

शिवपालगंज कहा नहीं है। देशभर में शिवपालगंज व्याप्त हैं 'राग दरबारी' में परिवेश को नायकत्व प्रदान किया गया है। इस युग में जब उपन्यासों से नायक तिरोहित होने लगे है, नायक विहित उपन्यासों की सृष्टि हो रही है और समूचे परिवेश को नायक का गौरव दिया जा रहा हैं, राग दरबारी में भी शिवपालगंज के परिवेश को ही नायक कहा जाएगा क्योंकि संपूर्ण कथानक उसी के इर्द-गिर्द परिक्रमा करता है। शिवपालगंज के जीवन के विविध पक्ष अपनी संपूर्ण विकृतियॉ और विसंगतियों के साथ उद्घाटित किए गए हैं और लेखक यही करना चाहता था।

राग दरबारी का उद्देश्य –

राग दरबारी के लेखक का उद्देश्य था समाज और जीवन में व्याप्त विसंगतियों की कुरूपता को रेखांकित करना और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने परिवेश चित्रण को सर्वाधिक महत्व दिया उसके द्वारा शिवपालगंज के विद्रूप चेहरे को निशुद्धता के साथ, उसने परिवेश गमी-रोग की नब्ज की परीक्षा की है, रोग को पहचाना है, भले ही उसका उपचार न बताया हो, पर रोग का निदान करना भी अपने आप में कम महत्वपूर्ण नहीं होता। अतः परिवेश की व्यापकता में सामाजिक विकृतियों को उभारकर रख देना लेखक की सफलता का प्रमाण है। परिवेश के विभिन्न चित्र-चलचित्र के

दृश्यों की भांति आते है, थोड़ी देर के लिए पाठक उनमें तन्मय हो जाता है फिर वे हट जाते है। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। प्रत्येक झाँकी अपना बिम्ब अंकित कर ओझल हो जाती है और ये बिम्ब एक कड़ी बनाते हैं और पाठक के चित्त पर स्थायी प्रभाव छोड़ जाते है। दृश्य ऑखों से ओझल हो जाने के बाद भी अपनी अनुगूंज बनाए रखता है। पाठक को सोचने को विवश करता है। यह लेखक की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

राग दरबारी में व्यंग्य -

1. शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य
2. मुकदमे (न्याय प्रणाली) पर व्यंग्य
3. को-ऑपरेटिव सोसायटी की कार्यप्रणाली पर व्यंग्य
4. पुलिस व्यवस्था पर व्यंग्य
5. ग्राम-पंचायत की चुनाव व्यवस्था पर व्यंग्य
6. 'गंजहे' अर्थात् शिवपालगंज के निवासियों पर व्यंग्य
7. गॉवों की दुर्दशा पर व्यंग्य

व्याकरण

11. संक्षेपण / सार लेखन (संक्षेप)

सार–लेखन (Precis) :– सार लेखन का आशय है किसी भी विषय वस्तु को संक्षेप में कहने की कला। सार लेखन एक कला है, जो व्यक्ति को निरन्तर प्रयास के बाद प्राप्त होती है। अर्थात् किसी लिखित सामग्री को मूल के लगभग एक–तिहाई भाग में संक्षिप्त में, सहज भाषा और व्यव्यस्थित रूप में प्रस्तुत करना ही संक्षेपण या सार लेखन है।

सार लेखन की विशेषताएँ एवं प्रक्रिया–

1. स्वतः पूर्णता
2. संक्षिप्तता
3. भावों में सुसम्बद्धता
4. सहज स्पष्ट भाषा शैली
5. भावों की क्रमबद्धता
6. छोटे व सटीक वाक्य
7. पहले से सुपठित
8. अनावष्यक व असंगत बातें का त्याग
9. प्रत्यक्ष कथन व संवादों को स्वविवेक व आवष्यकतानुसार लिखना
10. अन्य पुरूष का प्रयोग
11. स्वयं की टीका टिप्पणी व आलोचना नहीं
12. स्वयं के भाव व विचारों को नहीं जोड़ना
13. मूल अनुवाद का लगभग एक तिहाई होना
14. निर्धारित शब्द सीमा का पालन
15. विषय समझने हेतु शीर्षक देना
16. संक्षिप्त, सहीक, व सारगर्भित हो
17. महत्वपूर्ण बिन्दु क्रमबद्ध हो ।
18. अवतरण में आए उदाहरण, उद्वरण अथवा निषेषण नही होते
19. भाषा अलंकृत, बनावटी अथवा द्विअर्थी न हो ।

20. यथासंभव सामासिक पदों व छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए ।

12. पल्लवन / विस्तारण (Expansion of Ideas)

पल्लवन का अर्थ है– फलना फूलना या पनपना। जिस तरह कोई चीज नन्हें पौधे के रूप में विकसित होता हुआ एक वृक्ष का रूप धारण कर लेता है, ठीक उसी प्रकार एक भाव या विचार को विस्तार देना पल्लवन कहलाता है, अर्थात किसी सुगठित विचार या भाव का विस्तार पल्लवन है।

पल्लवन की सामान्य विधि नियम

पल्लवन एक कला होने के कारण उसमें सावधानियाँ रखना आवष्यक है। पल्लवन करने के सामान्य नियम निम्नलिखित हैं–

1. सर्वप्रथम दिये गये अवतरण के मूल कथन, वाक्य, सुक्ति, लोकोक्ति अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए तथा इसमें सन्निहित सम्पूर्ण भाव को अच्छी तरह से समझने का प्रयत्न करना चाहिये।
2. तब मूल विचार अथवा भाव के नीचे निहित सहायक विचारों को समझने की चेष्ठा करनी चाहिए।
3. मूल और गौण विचारों को समझ लेने के पश्चात् एक–एक कर सभी निहित विचारों को एक–एक अनुच्छेद में लिखना आरम्भ करना चाहिए।
4. अर्थ अथवा विचार का विस्तार करते समय उसी पुष्ठि में यथास्थान अलग से कुछ उदाहरण और प्रमाण भी दिये जा सकते हैं।
5. पल्लवन के लेखन में अप्रासंगिक बातों का अनावष्यक विस्तार या उल्लेख बिल्कुल नहीं किया जाना चाहिए।
6. पल्लवन में मूल तथा गौण भाव या विचार की टीका–टिप्पणी और अलोचना नहों करना चाहिए। उसमें मूल अवतरण के भावों का ही विस्तार और विष्लेषण होना चाहिए।
7. पल्लवन की रचना सदैव अन्य पुरूष में होनी चाहिए।
8. भाव और भाषा की अभिव्यक्ति में पूरी स्पष्टता, मौलिका और सरलता होनी चाहिए। वाक्य छोटे–छोटे और भाव अत्यन्त सरल होने चाहिए। इसमें अंलकृत भाषा अपेक्षित नहीं है।
9. पल्लवन में व्यास शैली का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसमें मूल भावों या विचारों को विस्तारपूर्वक लिखा जाना चाहिए।

13. समाचार लेखन–

'समाचार' शब्द सम+आचार शब्दों के संयोग से बना है। शब्दार्थ की दृष्टि से 'समाचार' का अर्थ सम्यक् आचार होता है, किन्तु आजकल इसका प्रयोग 'खबर', 'हाल', 'संवाद', 'संदे"ा', 'सूचना' आदि के पर्यायवाची के रूप में होता है, इस प्रसंग में इसे अंग्रेजी के रिपोर्टिग शब्द के पर्याय के रूप में लिया गया है। कोष के अनुसार किसी घटना अथवा कार्य का विवरण, जो किसी को सूचित करने के लिए हो या किसी को दी जाने वाली सूचना को समाचार रिपोर्ट कहते है। समाचार–लेखन या रिपोर्टिग समाचार लिखने की कला वि"ोष है।

समाचार के प्रकार

विषय वस्तु या तथ्य की दृष्टि से समाचारों को कई वर्गो में विभाजित किया जा सकता है, जैसे–खेल, सिनेमा, संवाद, सभा, घोषणाएँ, अपराध युद्ध, संस्कृति, चुनाव, किसी कम्पनी का विवरण, वित, बाजार, भाव आदि।

अच्छे समाचार लेखन की विशेषताएँ

1. समाचार का शीर्षक पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न करने वाला होना चाहिए।
2. समाचार सदैव प्रमाणिक होना चाहिए।
3. समाचार–लेखन में निष्पक्षता रहनी चाहिए।
4. समाचार–लेखन में स्वस्थ दृष्टिकोण होना चाहिए।
5. किसी व्यक्ति का नाम देते समय सावधानी रखनी चाहिए।
6. समाचार लेखन में जीवन के सभी क्षेत्रों को ध्यान में रखना चाहिए।
7. समाचार की भाषा सीधी, सरल और स्वाभाविक होनी चाहिए।

समाचार लेखन में सावधानियाँ–

समाचार लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

1. समाचार से संबंधित सभी तथ्यों की वस्तुपरक जाँच करनी चाहिए।
2. समाचार में व्यक्ति, वस्तु या घटना की उपयोगिता, उपादेयता का अध्ययन करके उस पर अपना विचार प्रस्तुत करना चाहिए।
3. समाचार में व्यक्ति, वस्तु या घटना के बारे में व्यक्तियों का मंतव्य जानकर उन्हें युक्तियुक्त रूप में उल्लिखित करना चाहिए।
4. समाचार में व्यक्ति के कार्यो एवं व्यवहारों के उपभोग एवं व्यवहारों और घटनाक्रमों तथा चर्चाओं आदि का यथोचित उल्लेख किया जाना चाहिए।
5. समाचार के अन्त में एक तटस्थ समीक्षक के रूप में अपने निष्कर्षो को प्रस्तुत करना चाहिये।

समाचार का चयन

समाचार लिखने से पूर्व सम्पादक को पत्र के अनुरूप समाचार चयन का महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है। समाचार एजेन्सियों, संवाददाताओं एवं अन्य स्त्रोंतो के समाचार संकलित करने के बाद संपादक का दायित्व है कि वह प्राप्त सामग्री को प्रभाव"ाली और रूचिकर बनाए। इस सम्बन्ध में डेली हेराल्ड' का मत महत्वपूर्ण है–

''हम अपने पत्र में ऐसे समाचार दें, जिससे पाठक मुस्कुराए और पढ़ने के लिए उत्साहित हो। प्रत्येक समाचारों का चयन करते समय हमें निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए–

1. **लोक आकर्षण**– समाचारों की सामग्री का चयन करते समय हमें लोकाकर्षण का सदैव ध्यान रखना चाहिए। सामग्री सामयिक, जीवन से सम्बन्धित आकार में लघु एवं महत्वपूर्ण होनी चाहिए, तभी समाचार जनता का ध्यान आकर्षित कर सकता है।
2. **लोकरूचि**– एक सफल सम्पादक को समाचार–लेखन में लोक रूचि, जाति रूचि और समूह रूचि पद वि"ोष ध्यान देना चाहिए। हत्या, डकैती, जेबकटी आदि के समाचारों से लोक–रूचि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति से सत्य को प्रस्तुत करने के लिए शालीनता का प्रयोग करना चाहिए।
3. **तथ्यों की पवित्रता**– कभी–कभी समाचारों के चयन की प्रक्रिया में सम्पादक के सामने धर्म संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रहित तथा निष्पक्षता को ध्यान में रखते हुए दोनों पक्षों के तथ्यों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

समाचार संक्षेपण

समाचारों का संक्षेपण या संक्षिप्तीकरण करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

1. समाचार संक्षेपण में मूल बातों को बार–बार पढ़कर उसकी मुख्य बातों को संग्रहीत करना चाहिए।
2. संक्षेपण का अभिलेख अन्य पुरूषों में होना चाहिए।

3. विचारों की पुनरूक्ति नहीं होनी चाहिए।
4. छोटे–छोटे वाक्यों में समाचार का पूर्ण भाव आ जाना चाहिए।
5. विचारों की क्रमबद्धता बनी रहनी चाहिए।
6. संवाददाता के अभिमत को अलग कर देना चाहिए।
7. नकारात्मक वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
8. वि"ोषणों का अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए।
9. भाषा सरल, स्पष्ट, संयत और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।
10. वर्तनी व्याकरण, वाक्य–रचना सम्बन्धी दोष नहीं होना चाहिए।

14. संधि–समास : (संरचना और प्रकार)

परिभाषा– दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। इस मेल में सम्बन्ध कारक या योजक शब्दों का लोप कर दिया जाता है। जैसे ध्यानमग्न = ध्यान + मग्न = ध्यान में मग्न समास रचना में दो पद (शब्द) होते है। पहला पद पूर्व पद कहलाता है दूसरा पद उत्तरपद कहलाता है।

विशेष –

- समास हेतु कम से कम दो पद होने चाहिए।
- समास होने पर दोनों पद या अन्य पद मिलकर एक संक्षिप्त रूप धारण कर लेते हैं।
- समास प्रक्रिया में बीच की विभक्तियों का लोप हो जाता है।
- समास होने पर जहाँ संधि संभव हो, वहाँ नियमों के अनुसार संधि भी हो जातो है।

परस्पर संबंध रखने वाले दो या अधिक पदों से प्रत्यय आदि का लोप कर नए शब्द का निर्माण करना ही समास कहलाता है।

समास के प्रकार

1. **द्वन्द्व समास**– द्वन्द्व का अर्थ है – जोड़ा, युग्म। द्वन्द्व में दोनों ही पद प्रधान होते हैं। पदो के बीच से और, तथा, एवं या, अथवा में से किसी योजक को हटाकर उनका युग्म बनाया जाता है। जैसे –

समस्त पद	विग्रह
सुख–दुख	सुख और दुख
रूपया–पैसा	रूपया और पैसा
उलटा–सीधा	उलटा और सीधा
हाथी–घोड़े	हाथी और घोड़े
राम–लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
जल–वायु	जल और वायु
वेद–पुराण	वेद और पुराण
धर्माधर्म	धर्मा या धर्म
हार–जीत	हार या जीत
दो–चार	दो या चार
थोड़ा–बहुत	थोड़ा अथवा बहुत
हानि–लाभ	हानि अथवा लाभ

2. **तत्पुरूष समास**– तत्पुरूष समास में उत्तर पद प्रधान होता है औ दोनों पदो के बीच से विभक्ति चिह्न (परसर्ग) को लोप होता है (ने को छोड़कर) जैसे–

समस्त पद	विग्रह
हस्तलिखित	हाथ से लिखित
धनहीन	धन से हीन
रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त
राहखर्च	राह के लिए खर्च
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
प्रसंगानुकूल	प्रसंग के अनुकूल
रामभक्त	राम का भक्त
पराधीन	पर के अधीन
स्वास्थ्यरक्षा	स्वास्थ्य की रक्षा
गृहस्वामी	गृह का स्वामी
वनवास	वन में वास
आपबीती	आप पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
ग्रामवास	ग्रम में वास
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
गंगाजल	गंगा का जल
जलधारा	जल की धारा
सिरदर्द	सिर में दर्द
भारतरत्न	भारत का रत्न
चायपत्ती	चाय की पत्ती
वनवास	वन में वास

3. **कर्मधारय समास**– कर्मधारय समास वहाँ होता है, जहाँ–
   - पूर्व विशषण हो और उत्तरपद विशष्य, जैसे–नीलगाय, रक्तकमल
   - दोनों पदों में एक उपमेय और दूसरा उपमान, जैसे–धन"याम, पुरूषसिंह

समस्त पद	विग्रह
नील गाय	नील है जो गाय
कमलनयन	कमल के समान नयन
नीलाबंर	नीला है जो अंबर
अंधविश्वास	अंधा है जो विश्वास
महादेव	महान है जो देव
नीलगगन	नीला है जो गगन

4. **द्विगु समास**– द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाची वि"ोषण होता है और समस्त पद समूह का बोध कराता है। जैसे–

समस्त पद	विग्रह
त्रिभुवन	तीन भुवनों का समूह
सप्तर्षि	सात ऋषियों का समूह
चौराहा	चार राहों का समूह

सतसई	सात सौ का समूह
दोपहरी	दो पहरों का समूह
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह
त्रिवेणी	तीन वेणियों का समूह
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
सप्ताह	सात दिनों का समूह
बारादरी	बारह दरों (दरवाजों) का समूह

5. **अव्ययीभाव समास**– अव्ययीभाव समास में पूर्वपद अव्यय होता है और समस्त पद भी अव्यय हो जाता है। जैसे –

समस्त पद	**विग्रह**
यथासमय	समय के अनुसार
भरपेट	पेट भर
गलीगली	प्रत्येक गली में
निस्संदेह	बिना संदेह के
आजीवन	जीवन भर
आजन्म	जन्म भर
मनमाना	मन के अनुसार
घड़ी–घड़ी	प्रत्येक घड़ी

6. **बहुब्रीहि समास** – इस समास में दोनों ही पदों का महत्व नहीं होता है किसी तीसरे पद की महत्ता होती है। दूसरे शब्दों में, पूरा समस्त पद किसी अन्य पद के लिए रूढ़ होता है। जैसे– दशानन = दश+आनन → रावण

यहाँ न तो पूर्वपद द"ा (दस) का अर्थ दस है, न उत्तरपद आनन (मुख) का। दोनों पद मिलकर रावण के लिए रूढ़ हो गए हैं। इसी प्रकार –

समस्त पद	विग्रह
त्रिनयन	तीन है नयन जिसके अर्थात् (शिव)
चतुरानन	चार हैं आनन (मुँह) जिसके अर्थात (ब्रह्मा)
महावीर	महान है जो वीर अर्थात (हनुमान)
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात (गणेश)
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात (शिव)
चक्रधर	चक्र को धारण करे जो अर्थात (विष्णु)
घनष्याम	घन के समान श्याम है जो अर्थात (कृष्ण)
चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात (विष्णु)
पद्मासना	पद्म (कमल) आसन है जिसका अर्थात (सरस्वती)
गोपाल	गायों को पालने वाला अर्थात (कृष्ण)

संधि -

भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है, वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं। शब्दों के सार्थक मेल से वाक्यों की रचना की जाती है। कुछ शब्द संधि द्वारा तो कुछ शब्द समास की प्रक्रिया द्वारा बनाए जाते है।

संधि की परिभाषा - प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण, तथा द्वितीय शब्द का प्रथम वर्ण मिलाकर एक नए वर्ण की उत्पत्ति करते हैं उस प्रक्रिया को संधि कहा जाता हैं। संधि में वर्णों को अलग करने की प्रक्रिया को संधि-विच्छेद कहते है।

उदाहरण - विद्या + आलय = विद्यालय

संधि के प्रकार - संधि मुख्य तीन प्रकार की होती हैं -

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि - जिस संधि में स्वर से स्वर का मेल होता है उसे स्वर संधि कहा जाता है।

स्वर संधि के प्रकार -
1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

1. **दीर्घ स्वर संधि -** जहाँ शब्द में छाच (छोटा) और दीर्घ (बड़ा) स्वर मिलकर दीर्घ स्वर ही बनाते हैं उसे दीर्घ स्वर संधि कहा जाता है।

उदाहरण - विद्या + आलय = विद्यालय
हिम + आलय = हिमालय
वाचन + आलय = वाचनालय

2. **गुण स्वर संधि** – यदि अ अथवा आ के बाद इ, ई, उ, ऊ और ऋ आते हैं तो क्रमशः ए, ओ, और अर बन जाते है।

उदाहरण –	नर + इन्द्र = नरेन्द्र	अ + इ = ए
	सूर्य + उदय = सूर्योदय	अ + उ = ओ
	देव + ऋषि = देवर्षि	अ + ऋ = अर

3. **वृद्धि स्वर संधि** – जब अ अथवा आ के साथ ए-ऐ आता हैं तो – ऐ

उदाहरण –	मत + एक = मतैक्य	अ + ए = वनौषधि
	वण + औषधि = वनौषधि	अ + औ = औ
	महा + औषणि = महौषधि	आ + औ = औ

4. **यण स्वर संधि** – यदि इ, ई के बाद अन्य स्वर आए तो 'य' बनेगा, यदि उ, ऊ के आगे कोई अन्य स्वर आये तो व और ऋ के आगे कोई अन्य स्वर आये तो 'र' बनेगा।

उदाहरण –	यदि + अपि = यद्यपि	इ + अ = य
	इति + आदि = इत्यादि	इ + अ = य

5. **अयादि स्वर संधि** – यदि ए, ऐ, ओ और औ के आगे कोई भिन्न स्वर आता हैं तो क्रमशः अय् आय् अव आव बन जाता है।

उदाहरण –	ने + अन = नयन	ए + अ = अय्
	पौ + अन = पवन	औ + अ = अव

2. व्यंजन संधि –

जब किसी व्यंजन का मेल किसी व्यंजन या स्वर से होता हैं तो व्यंजन संधि कहलाता हैं।

उदाहरण – दिक् + गज = दिग्गज

नियम –

1. यदि क, च, ट, त, प के साथ किसी अनुनासिक व्यंजन को छोड़कर कोई स्पर्श व्यंजन आता हैं तो वर्ग का पहले वर्ण तीसरा वर्ण हो जाता है।
   दिक् + गज = दिग्गज
   षट् + दर्शन = षड्दर्शन
   सत् + वाणी = सद्वाणी
2. यदि क, च, ट, त, प के साथ न या म का प्रयोग होता हैं पहले वर्ण का पांचवा वर्ण हो जाता है।
   उदाहरण – वाड़मय = वाक् + मय
   जगन्नाथ = जगत् + नाथ
3. यदि 'म' के बाद स्पर्श व्यंजन आते तो म का अनुस्वार (.) या बाद वाले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है।
   उदाहरण – संगम = सम् + गम
4. यदि कोई शब्द के प्रांरभ में 'स' हो और उसके पहले अ या आ के अलावा कोई स्वर आए तो 'स' का षश हो जाता ळै।
   उदाहरण – अभि + सेक = अभिषेक
   वि + सम = विषम
5. यदि कोई यौगिक शब्द के अंत में न हो तो उसका लोप हो जाता है।
   उदाहरण – राजन् + आज्ञा = राजाज्ञा

3. विसर्ग संधि –

स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार उत्पन्न होता हैं उसे विसर्ग संधि कहा जाता है।

उदाहरण – निः + चय = निश्चय
निः + संदेह = निस्संदेह
निः : आशा = निराशा

समास और संधि में अन्तर –

क्र.	समास	संधि
1	दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से जिनमें संबंध बताने वाले शब्दों का लोप हो जाता हैं उसे समास कहते है।	प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण तथा द्वितीय शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर एक नए वर्ण की उत्पत्ति होती है। उसे संधि कहते है।
2	समास में शब्दों का मेल होता है।	संधि में वर्णों का मेल होता है।
3	समास के शब्दों को अलग करने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहा जाता है।	संधि के वर्णों को अलग करने की प्रक्रिया को संधि-विच्छेद कहा जाता है।
4	समास में तद्भव शब्दों का उपयोग किया जाता है।	संधि में तत्सम शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
5	समास में व्याकरणीय नियमों का पालन शिथिलता से किया जाता है।	संधि में व्याकरणीय नियमों का पालन कठोरता से किया जाता है।
6	समास से बने शब्दों को समासिक शब्द कहा जाता है।	संधि से बने वर्णों को संधिवर्ण कहा जाता है।
7	समास छः प्रकार के होते है।	संधि तीन प्रकार की होती है।

15. अलंकार

''अलंकार का अर्थ है – गहना आभूषण। काव्य रूपी काया की शोभा बढ़ाने वाले अवयव को अलंकार कहते है। काव्यशास्त्र के आचार्यों की दृष्टि से अलंकार की परिभाषा – ''काव्यकी शोभा बढ़ाने वाले शब्दों को अलंकार कहते है।

साहित्य में अलंकार उन चमत्कारिक शब्दों तथा उन साहित्यिक युक्तिया को कहते है जो काव्य या साहित्य को सुसज्जित तथा मनमोहन बनाने के काम आते है। जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते है, उसी प्रकार अलंकार साहित्य या काव्य को सुन्दर तथा रोचक बनाते है। प्रसिद्ध विद्वानगण 'दण्डी', भामह ने भी साहित्य में रस से ज्यादा अलंकारों को महत्व दिया है।

सारांशतः उक्ति के चमत्कार को अलंकार कहते है। अलंकार केवल शब्द या अर्थ का उत्कर्ष करते है। वे साधन है, साध्य नहीं।

परिभाषा – आचार्य वामन के अनुसार –
''जो किसी वस्तु को अलुकृत करे, वह अलंकार है।''

अलंकार के भेद
शब्द और अर्थ को अस्थिर धर्म मानने पर अलंकार दो प्रकार के होते है।

1. शब्दालंकार – जब शब्द में चमत्कार हो।
2. अर्थालंकार – जब अर्थ में चमत्कार हो।

शब्दालंकार के मुख्य भेद – इस अलंकार में शब्द वि"ोष के कारण काव्य में सौदर्य वृद्धि या चमत्कार उत्पन्न होता है। शब्दालंकारों के मख्य भेद है –

1. **अनुप्रास अलंकार** – जब एक ही अक्षर या व्यंजन किसी एक वाक्य में एक से अधिक बार प्रयोग हो तो उसे अनुप्रास अलंकार कहते है। इसका यह अर्थ नहीं की उसमें एक ही स्वर का प्रयोग हो। जैसे –

   ''चारू चन्द्र की चंचल किरणे, खेल रही थी जल–थल में,
   स्वच्छ चाँदनी बिछी हुइ थी, अवनि और अम्बर तल में''

   प्रथम पंक्ति में चारू–चन्द्र तथा द्वितीय पंक्ति में अवनि अंबर के प्रयोग से अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास अलंकार के तीन भेद माने गए है। छेकानुप्रास, लाटानुप्रास, वृत्यानुप्रास।

   छेकानुप्रास – एक ही वर्ण की दो बार आवृत्ति होने पर छेकानुप्रास अलंकार होता है – ''स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई थी, अवनि और अम्बर तल में। यहाँ 'अ' वर्ण दो बार प्रयोग हुआ है।''

   वृत्यानुप्रास – जब यह आवृत्ति दो से अधिक बार होती है तब वृत्यानुप्रास अलंकार होता हैं जैसे – ''चारू चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल–थल में।'' यहाँ 'च' वर्ण दो से अधिक बार प्रयोग में आया है।

   लाटानुप्रास – जहाँ शब्द और अर्थ की आवृत्ति में अभिप्राय मात्र की भिन्नता रहती है। जैसे–
   ''पराधीन जो जन, नहीं स्वर्ग नरक ता हेतु,
   पराधीन जो जन नहीं, स्वर्ग नरक ता हेतु''

   यहाँ सामान्य रूप कोई भिन्नता न होने पर भी अन्वय (अर्द्ध विराम) द्वारा भिन्न हो जाता है। जैसे – प्रथम पंक्ति का अर्थ है – जो मनुष्य पराधीन है, या हेतु स्वर्ग भी नर्क (बना) है। दूसरी पंक्ति का अर्थ है – जो जन पराणीन नहीं, ता हेतु नरक (भी) स्वर्ग है। उसके लिए नर्क का वास भी स्वर्ग के समान है।
2. **पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार** – जहाँ एक ही शब्द दो या इससे अधिक बार आता है और ऐसा होने से ही अर्थ का सौंदर्य बढ़ जाता है,वहाँ पुनरूक्ति प्रका"ा अलंकार होता है। जैसे –

   धीरे–धीरे वहन करके तू उन्हीं को उड़ा ला।
3. **यमक अलंकार** – ''"ाब्दों या वाक्या"ाों की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, लेकिन उनके अर्थ सर्वथा भिन्न होते है, वहाँ 'यमक' अलंकार होता है।'' उदाहरण –

'कनक–कनक से सौ गुनी, मादकता अधिकाय'।

यहाँ 'कनक शब्द की आवृत्ति दो बार है तथा अर्थ भिन्न है। कनक (सोना) तथा कनक (धतूरा)

4. **श्लेष अलंकार** – जब वाक्य में एक से अधिक अर्थ वाले शब्दा या शब्दों का प्रयोग किया जाए और इस प्रकार एक से अधिक अर्थों का बोध कराया जाए तब श्लेष अलंकार होता है। जैसे –

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।।

यहाँ पानी शब्द के तीन अर्थ है – चमक, सम्मान तथा जल।

5. **वक्रोक्ति अलंकार** – जब किसी व्यक्ति के एक अर्थ में कहे गये शब्द या वाक्य को कोई दूसरा व्यक्ति जानबूझकर दूसरा अर्थ कल्पित करें तब वक्रोक्ति अलंकार होता है जैसे –

कौन द्वारा पर? हरि मै राधे
क्या वानर का काम यहाँ?

राधा भीतर से पूछती है – बाहर तुम हौन हो? कृष्ण उत्तर देते है – राधे मै हरि हूँ! राधा हरि का अर्थ कृष्ण न लगाकर वानर लगाती है और कहती है कि इस नगर में वानर का क्यों काम?

6. **अर्थालंकार** – इस अंलकार में अर्थ के द्वारा सौन्दर्य की वद्धि होती है।

अर्थालंकार के प्रमुख 5 प्रकार निम्न लिखित है –

1. **उपमा** – जहाँ दो पृथक वस्तुओं मे गुण, धर्म या स्वरूप के आधार पर समानता दिखाई जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। जिसकी समता किसी दूसरे से की जाती है, उसे उपमेय और जिससे समानता की जाती है, उसे उपमान कहते है। जिसके आधार पर समानता होती है, उसे साधारण धर्म कहते हे। सम, समान, सदृ"ा तुल्य आदि उपमावाचक शब्द होते है।

जहाँ उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द चारों तत्व रहते है, वहाँ पूर्णोपमा और जहाँ एक या अधिक नहीं रहता वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है। जैसे –

मुख कमल जैसा सुन्दर है।
1. उपमेय – मुख, 2. उपमान – कमल, 3. वाचक शब्द – जैसा 4. साधारण धर्म – सुन्दर

सागर–सा गंभीर हृदय हो, गिरि–सा ऊँचा हो जिसका मन,
ध्रुव–सा जिसका अटल लक्ष्य हो, दिनकर–सा हो नियमित जीवन।।

2. **रूपक** – जब एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आरोप किया जाए, अर्थात् जब तक वस्तु को दूसरी वस्तु बना दिया जाए।

जैसे
चरन सरोज पखारन लागा

यहाँ चरणों को कमल बनाया गया है।

3. **उत्प्रेक्षा** – जब एक वस्तु में दूसरी की संभावना प्रकट की जाए, अर्थात् एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लिया जाय। दोनों वस्तुओं में कोई समान धर्म होने के कारण ऐसी संभावना की जाती है। जैसे –

मानों, मनो, मनु–जाओं जनु सा आदि
जैसे – कहती हुई यो उत्तरा के नेत्र जल से भर गये।
हिम के कणों से पूर्ण मानों हो गये पंकज नये।

यहाँ आँसुओं से भरे हुए उत्तरा के नेत्र में ओस कण युक्त पंकजों की संभावना की गई है।

4. **भ्रांतिमान** – जहाँ समानता के कारण नि"चय रूप से एक वस्तु को दूसरी मान लिया जाये वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।

जैसे– पाँय महावर देन को नाइन बैठी आय।
फिर–फिर जानि महावरी एड़ी मीडऋति जाय।

यहाँ नाइन ने अधिक लाल होने के कारण एड़ियों को महावरी समझकर रगड़ना शुरू कर दिया है।

जानि श्याम को श्याम धन नाचि उठै वन मोर।

5. **संदेह** – जब सादृ"य के कारण एक वस्तु में अनेक वस्तुओं के होने की संभावना दिखाई पड़े और नि"चय न हो। जैसे –

कहहिं सप्रेम एक एक पाहीं
राम लखन सखि! होही कि नाहीं

भरत, शत्रुघ्न को देखकर गाँवों की स्त्रियों को सादृ"य के कारण उनके राम, लक्ष्मण होने का संदेह होता है।

16. छंद

छंद –

शब्दों की संख्या, मात्राओं की गणना तथा क्रय के आधार पर नियमों में बंधी रचना को छंद कहते है। छंद का प्रारंभ हमारी संस्कृति में वेदों से माना गया है। सर्वप्रथम छंद का प्रयोग ऋगवेद से माना जाता है।

जिस प्रकार गद्य को नियमों में बांधने का कार्य व्याकरण के द्वारा किया जाता हैं ठीक उसी प्रकार काव्य (पद्य) को नियमों में बांधने का कार्य छंद योजना द्वारा किया जाता है। छंद काव्य शास्त्र की ऐसी परम्परा हैं जो हमारे मस्तिष्क में स्पष्ट प्रभाव छोड़ती है। छंदों में लिखी रचना का प्रभाव मानव मस्तिष्क पर लंबे समय तक अंकित रहता है। छंद में लय, ताल, सुर, तुक आदि होने के कारण यह ग्रहण करने में सरल होते है। इसीलिए हमारी संस्कृति में लेखन का कार्य सर्वप्रथम छंदों द्वारा ही किया गया। छंद हमारी परम्परा को व्यक्त करते है। छंद में कही गई बात जब लय में बहती हैं तो वह अधिक स्पष्ट व जल्दी ग्रहण कर ली जाती है।

छंद के मुख्य अंग (भेद) निम्नलिखित है -

1. मात्रा या वर्ण
2. चरण (चार)
3. संख्या या क्रम
4. लघु और गुरू
5. गणना
6. यति
7. यति
8. तुक

1. **मात्रा या वर्ण** - छंद में चार चरण होते है।, प्रत्येक चरण में मात्राएँ पाई जाती है। पहले तथा तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती है। जिन्हें हम लघु (।) और (S) गुरू के माध्यम से व्यक्त करते है।
2. **चरण** - छंद में चार चरण होते है, प्रत्येक चरण की मात्राओं का क्रम निश्चित होते है। पहले व तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ तथा दूसरे व चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती है। पहले चरण व तीसरे चरण को विषम चरण कहते है तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहा जाता है।
3. **संख्या या क्रम** - छंद में संख्या और क्रम के आधार पर चरणों को रचा जाता है जिसे लघु और दीर्घ की मात्राओं द्वारा प्रस्तुत करते है।
4. **लघु और गुरू** - छंद में मात्राओं को केवल मात्रिक छंद में गणना के आधार पर लिखा जाता हैं इसमें लघु (।) और गुरू (S) की मात्रा को गिना जाता हैं लघु की गणना (एक) तथा गुरू की गणना (दो) की जाती है।
5. **गणना** - छंद में मात्रा या वर्ण की गिनती को गणना कहते है।
6. **यति** - यति का अर्थ हैं विराम। प्रत्येक चरण के अंत में विराम चिन्ह का प्रयोग किया जाता हैं अर्थात् थोड़ा विश्राम किया जाता है।
7. **गति** - गति छंद के चरणों में लय भरकर उसके प्रवाह को आगे बढ़ाती है।
8. **तुक** - छंदो के चरणों के अंत में लय भरकर छंद को आगे बढ़ाने का काम करते है।

छंद के प्रकार -

1. वर्णिक छंद
2. मात्रिक छंद
3. मुक्त छंद

1. **वर्णिक छंद** - जहाँ वर्णों की गणना के आधार पर रचा गया छंद वणिक छंद कहलाता है।
   उदाहरण - मम जाहि राघव मिलही मिलही सोबरू
   सहज सुन्दर सांवरो
   करूणा निधान सुजान सील स्नेह
   जानत रावरो।
2. **मात्रिक छंद** - मात्राओं की गणना के आधार पर नियमों में बंधी रचना को मात्रिक छंद कहते है। दोहा और चौपाई मात्रिक के उदाहरण है।

S	II	III	ISI	II	=	13
श्री	गुरू	मुकुट	सरोज	रज		
II	II	III	ISI		=	11
यिज	मन	मुकुट	सुधार			
IIII	IIII	III	II		=	13

बनरउ	रघुवर	वियल	जस		
S	SII	II	SI	=	11
जो	दायक	फल	चार		

3. **मुक्त छंद** – जहाँ न तो मात्राओं की गणना की जाती हैं न ही वर्णों की। उसे मुक्त छंद कहते है। आधुनिक युग में लिखी गई कविताएँ मुक्त छंद कहलाती है।
(मोचीराम कविता का उदाहरण)

रापी से उठी आंखो ने मुझे
क्षण भर टटोला
और जैसे
पतियाये हुए स्वर में
वह हंसते हुए बोला
बाबूजी,
सच कहूँ, मेरी निगाह में
न कोई छोटा है, न कोई बड़ा
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता हैं
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है।

17. शब्द एवं वाक्य रचना प्रकार

शब्द रचना –

शब्द – भाषा की लघुत्तम इकाई जिससे एक सुनिश्चित अर्थ प्राप्त हो उसे शब्द कहते है।
अर्थात् वर्णों के सार्थक मेल से बनी योजना को शब्द कहते है।

1. तत्सम – वे शब्द जो अपनी मूल भाषा से निकलकर हिन्दी में प्रयोग में लाये जाते हैं उन्हें तत्सम शब्द कहते है।
   1) मूल शब्द (परम्परागत) 2) नवनिर्मित शब्द
   उदाहरण – घोटक, जिव्हा, अभियंता, अधिवक्ता, प्राचार्य, कम्प्युटरीकरण आदि।
2. तद्भव शब्द – वे शब्द जो अपने मूल रूप से बदलकर बिगड़े हुए रूप में भाषा में प्रयोग में लाये जाते हैं उन्हें तद्भव शब्द कहते है।
   उदाहरण – चक्षु – नेत्र, घोटक-घोड़ा, घृत-घी आदि।
3. देशी शब्द – वे शब्द जो भारतीय भाषाओं की बोलियों से प्रयुक्त होकर भाषा में प्रयोग में लाये जाते हैं उसे देशी शब्द कहते है।
   ओढ़नी, बछड़ा, बेलन, चकला, लड़का, छैना कटोरा आदि।
4. विदेशी शब्द – वे शब्द जो अपनी भाषा के अतिरिक्त किसी दूसरी भाषा (विदेशी भाषा) से लेकर प्रयोग में लाये जाते हैं उन्हें विदेशी भाषा कहते है।
   उदाहरण – कागज, पेंट, कोट, मुल्ला मौलवी, कैंची, लालटेन आदि।

शब्द के मुख्य प्रकार –

शब्द दो प्रकार के होते है

विकारी (परिवर्तनशील)	अविकारी (अपरिवर्तनशील)
संज्ञा	क्रिया विशेषण
सर्वनाम	संबंध बोधक
क्रिया	समुच्चय बोधक
विशेषण	विस्मयादि बोधक

विकारी शब्द – वे शब्द जो लिंग वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं उन्हें विकारी शब्द कहा जाता है।

संज्ञा – किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को बोध करवाने वाले शब्दों को संज्ञा कहते है।

संज्ञा

वस्तु वाचक	भाववाचक
व्यक्ति वाचक	गुण, दशा या कार्य बोध हो।
जाति वाचक (समूह)	एकता, स्वतंत्रता, मित्रता, सुन्दरता
स्थानवाचक	

सर्वनाम – वे विकारी शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में लाये जाते हैं उन्हें सर्वनाम कहते है।

		एकवचन	बहुवचन
1. निजवाचक	–	मैं	हम
2. पुरूषवाचक	–	मैं	हम
		तुम	तुम्हारा
3. निश्चय वाचक	–	यहा वहॉ जहॉ जहॉ	
4. अनिश्चयवाचक	–	शायद, कोई, कुछ, किसी	

क्रियाः– वे विकारी शब्द जिससे किसी कार्य के पूर्ण होने का बोध हो उसे क्रिया कहते है।

चार प्रकार की होती है –

1. सकर्मक क्रिया (कर्म पर आधारित)
2. अकर्मक क्रिया (कर्ता पर आधारित)
3. संयुक्त क्रिया (दो एक साथ)
4. प्रेरणार्थक (किसी को इन्य को प्रेरणा देना)

1. सकर्मक क्रिया - राम ने पत्र पढ़ा।
2. अकर्मक क्रिया - पत्र राम ने पढ़ा।
3. संयुक्त क्रिया - राम पत्र पढ़ चुका।
4. प्रेरणार्थक - राम के द्वारा पत्र पढ़ा।

विशेषणः- वे विकारी शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताते हो उन्हें विशेषण कहा जाता है।

1. संख्यावाचक - दो गुना, चार गुना, दस गुना।
2. गुणवाचक - फुर्तीला, चतुर, सुन्दर, वाचाल
3. परिमाण - थोड़ा, ज्यादा, बहुत कम, अधिक
4. सार्वनामिक विशेषण - जहॉ संज्ञा सर्वनाम का प्रयोग एक साथ किया जाता हैं उसे सार्वनामिक विशेषण कहते है।

अविकारीः- वे शब्द जो लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित नहीं होते उन्हें अविकारी शब्द कहते है।

1. क्रिया विशेषण -

वह अविकारी शब्द जो क्रिया और विशेषण की विशेषता बताता हो उसे क्रिया विशेषण कहते है।

लड़का तेज दौड़ता है। लड़की तेज दौड़ती है।
लड़का बहुत गोरा है। लड़की बहुत गोरी है।

2. संबंध बोधक -

वह अविकारी शब्द जो दो शब्दों को एक ही वाक्य में जोड़ने का काम करते है उन्हें संबंध बोधक कहते है।

1. मेरे घर के सामने चन्द्र पैलेस है।
2. राम, श्याम और सीता मेघदूत गए।

3. समुच्चय बोधक -

वे अविकारी शब्द जो दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक शब्द कहते है।

1. मैं स्टेशन पहुँचा और गाड़ी छूट गई।
2. मैं तुम्हें माफ कर देता परन्तु तुम इस लायक नहीं हो।

किन्तु, यद्यपि, क्योंकि, ताकि, लेकिन, मगर, इसलिए, और नहीं तो, अन्यथा, अथवा, मानो।

4. विस्मयादि बोधक -

वे अविकारी शब्द जिसमें आश्चर्य का भाव सुख या दुख के रूप में प्रस्तुत हो उसे विस्मयवाचक शब्द कहते है।

ओह! अरे! हे राम! वाह! त्राहिः त्राहि! आहा!

उपसर्ग और प्रत्यय -

उपसर्ग - वे शब्दांश जो शब्द के पूर्व/पहले प्रयोग में लाकर शब्द को एक नया अर्थ प्रदान करते है, उन्हें उपसर्ग कहा जाता है।

उपसर्ग तीन प्रकार के होते है -

1. संस्कृत
2. हिन्दी

3. विदेशी

संस्कृत के उपसर्ग – अति, अधि, अनु, अप, अभि।
अति – अति आवश्यक, अतिउत्तम, अतिरिक्त, अतिसुन्दर, अतिकोमल।
अधि – अधिभार, अधिनायक, अधिपति
अनु – अनुमान, अनुराधा, अनुशासन, अनुगमन, अनुराग
अप – अपशब्द, अपमान, अपयोग, अपवाद, अपकर्ष
अभि – अभिवादन, अभिनंदन, अभिजीत, अभियान, अभिनीत, अभिव्यक्ति, अभिभाषाण।
अव – अवकाश, अवतार, अवसान, अवगुण, अवशेष, अवचेतन, अवनति।

हिन्दी के उपसर्ग – अ, प्र, कु, सु
अ – अप्रत्यक्ष, असत्य, अशुद्धि, अरल, अकारण, अनिश्चय।
प्र – प्रशिक्षण, प्रभारी, प्रवीर, प्रगल्भ, प्रयुक्त, प्रबल, प्रमुख।
कु – कुकर्म, कुसंगत, कुपुत्र, कुमार्ग, कुचक्र, कुचाल।
सु – सुस्वागतम, सुमित्र, सुपुत्र, सुनयन, सुडौल, सुजान, सुघड़, सुकन्या, सुफल

विदेशी उपसर्ग – अल, कम, खूब, बद, खुश
अल – अलकायदा, अलगरज, अलगोज़ा, अलादीन।
कम – कमजोर, कमबख्त, कमसिन, कमखर्च, कमउम्र, कमकीमत, कमअकल।
खूब – खूबदिल, खूबसूरत।
खुश – खुशआमद, खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशगवार, खुशखबर, खुशनसीब, खुशबू।
बद – बदबू, बदनाम, बदकिस्मत, बद्दुआ, बदमिजाज, बद्हया, बद्हवास।

प्रत्यय

वे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर शब्द को एक नया अर्थ प्रदान करते है। उन्हें प्रत्यय कहते है।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं –
1. कृदन्त / कृत
2. तद्धित

1. कृदन्त / कृत प्रत्यय –
जो प्रत्यय क्रिया या धातु के अंत में प्रयोग में लाए जाते हैं उसे कृदन्त या कृत प्रत्यय कहते है।

उदाहरण –

मूलधातु	प्रत्यय	क्रिया
चल	ना	चलना
उठ	ना	उठना
बैठ	ना	बैठना
पी	ना	पीना
खा	ना	खाना

2. तद्धित प्रत्यय –

संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण के अंत में प्रयोग में लाए जाने वाले शब्दांशों को तद्धित प्रत्यय कहते है।
उदाहरण –

मूलधातु	प्रत्यय	क्रिया
मीठा	आई	मिठाई
खट्टा	आई	खटाई
दूध	वाला	दूधवाला
कपड़े	वाला	कपड़ेवाला
अपना	पन	अपनापन
पराया	पन	परायापन
पीला	पन	पीलापन

वाक्य संरचना –

भाषा की सबसे छोटी इकाई या अक्षर या वर्ण है, वर्णो के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति ही वाक्य बनाती है।

परिभाषा– जिस शब्द समूह से किसी विचार का भाव पूर्णरूप से प्रकट होता है उसे वाक्य कहते हैं। 'राम ने रावण को मारा' यह वाक्य रचना पूर्ण अर्थ को प्रकट कर रही है।

वाक्य के घटक–

वाक्य को मुख्य रूप से दो घटकों में बांटा जा सकता है –
1.उद्देष्य, 2. विधेय
उद्देष्य में – कर्त्ता।
विधेय में–कर्म और क्रिया आती है।

अर्थात एक साधारण वाक्य–

कर्त्ता+कर्म+क्रिया द्वारा पूर्ण होना हैं।
जिन अव्यवों से मिलकर वाक्य की संरचना होती है, उन्हें वाक्य के घटक या अंग कहते हैं। वाक्य के मूल दो घटक हैं कत्ता
कर्त्ता और क्रिया इसके बिना वाक्य की रचना संभव नहीं हैं।
उद्देश्य– वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा गया हो उसे उद्देष्य कहते हैं।
इसमें कर्म और क्रिया का विस्तार आ जाता ह ।
रचना के आधार पर वाक्यों के मुख्य तीन भेद हैं –

1. सरल वाक्य (Simple Sentence)
2- मिश्र वाक्य (Complex Sentence)
3- संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

1. सरल वाक्य (Simple Sentence) – जिन वाक्यों में एक कर्त्ता होता है, एक कर्म और एक क्रिया होती है उसे सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं।
   उदाहरण – राम ने खाना खाया
   कर्त्ता + कर्म + क्रिया

2. मिश्र वाक्य (Complex Sentence)& जिन वाक्यों में एक मुख्य वाक्य (प्रधान वाक्य) तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हो उसे मिश्र वाक्य कहते है। आश्रित उपवाक्य समुच्चय बोधक शब्दों, जैसे यदि, तो, तब, जहां, वहां, यद्यपि, तथापि, लेकिन, मगर, जैसे शब्दों से जुड़े होते हैं।

उदाहरण–

1. जो छात्र परिश्रम करते हैं, वे अवष्य सफलता प्राप्त करते हैं।
2. इस वर्ष वर्षा अच्छी होती तो फसल अच्छी होती।
3. यदि छुट्टियां हुई तो हम घूमने अवष्य जायेंगे।

3. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence) – जिन वाक्यों में एक या एक से अधिक प्रधान वाक्य, तथा एक या एक से अधिक उपवाक्य हो उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। ये वाक्य तथा, किन्तु, परन्तु, यद्यपि, लेकिन, तथापि, इसलिए, मगर अतः आदि शब्दों से जुड़े होते हैं।

उदाहरण–

1. मैं प्रतिदिन योग करता हूँ और घूमने जाता हूँ।
2. समय बहुत खराब है इसलिए संभलकर चलना चाहिए।
3. क्योंकि वह बीमार था इसलिए यात्रा

रचना के आधार पर वाक्यों के मुख्य तीन भेद हैं–

1. सरल वाक्य (Simple Sentence) 2. मिश्र वाक्य (Complex Sentence) 3. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

1. सरल वाक्य (Simple Sentence)& जिन वाक्यों में एक कर्त्ता होता है, एक कर्म और क्रिया होती है उसे सरल वाक्य या साधरण वाक्य कहते हैं।
   उदाहरण– राम ने खाना खाया
   कर्त्ता + कर्म + क्रिया
2. मिश्र वाक्य (Complex Sentence) – जिन वाक्यों में एक मुख्य वाक्य (प्रधान वाक्य) तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्र वाक्य कहते है। आश्रित उपवाक्य समुच्चय बोधक शब्दों, जैसे यदि, तो, जब, जहां, वहां, यद्यपि, तथापि, लेकिन, मगर, जैसे शब्दों से जुड़े होते हैं।

   उदाहरण– जो छात्र परिश्रम करते हैं, वे अवष्यय सफलता प्राप्त करते हैं।
   1. जो गरजते है, वे बरसते नहीं।
   2. इस वर्ष वर्षा अच्छी होती तो फसल अच्छी होती।
   3. यदि छुट्टियां हुई तो हम घूमने अवष्य जायेंगे।

3. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence) जिन वाक्यों में एक या एक से अधिक प्रधान वाक्य, तथा एक या एक से अधिक उपवाक्य हों उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। ये वाक्य तथा, किन्तु, परन्तु, यद्यपि, लेकिन, तथापि, इसलिए, मगर अतः आदि शब्दों से जुड़े होते है।
   उदाहरण– 1. मैं प्रतिदिन योग करता हूँ और घूमने जाता हूँ। 2. समय बहुत खराब है इसलिए संभलकर चलना चाहिए । 3. क्योंकि वह बीमार था इसलिए यात्रा नहीं कर सका ।

18. त्रुटि संशोधन (अशुद्धि संशोधन)

भाषा हमारे सामाजिक व्यवहार का माध्यम है। इसके माध्यम से हम अपने विचारों, हाव भावों, आदि को अभिव्यक्त करते हैं। किन्तु यह आवश्यक है कि जो भी व्यवहार भाषा के माध्यम से किया जाए वह सर्वमान्य व व्याकरण की दृष्टि शुद्ध हो। भाषा में पायी जाने वाली गलतियों अथवा त्रुटियों को हम अ"ाुद्धि कहते हैं और इसे सुधारना त्रुटि संशोधन कहलाता है।

अशुद्धियों को प्रमुखतः चार भागों में बाँटा गया है।

1. उच्चारण एवं वर्तनी सम्बंन्धित अ”ाुद्धियाँ
2. शब्दगत अ”ाुद्धियाँ
3. शब्दार्थगत अ”ाुद्धियाँ
4. वाक्यगत अ”ाुद्धियाँ

1. **उच्चारण एवं वर्तनी सम्बंधित अशुद्धियाँ** – भाषा का व्यवहार या प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार से होता है – मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति में। मौखिक अभिव्यक्ति का संबंध उच्चारण यानि बोलने से है, व लिखित अभिव्यक्ति का संबंध मात्रा अथवा वर्तनी से है।

हिन्दी में उच्चारण का विशेष महत्व है क्योंकि यह जैसे बोली जाती है, वैसे ही लिखी जाती है। अशुद्ध उच्चारण होने से भाषा अशुद्ध लिखी जाती है।

उच्चारण एवं वर्तनी से संबंधित अशुद्धियों के उदाहरण –

अशुद्ध	**शुद्ध**
कवी	कवि
व्यक्ती	व्यक्ति
पुर्ण	पूर्ण
अत्याधिक	अत्यधिक
आयू	आयु
गुन	गुण
पूज्यनीय	पूजनीय/पूज्य
बारात	बरात
चहिये	चाहिए
तलाब	तालाब
कढाई	कढ़ाई
सांय	सायं
फन(साँप का)	फ़न(कला)
गज(हाथी)	ग़ज(एक नाम)
जाग्रत	जागृत
कवियत्री	कवयित्री
गुणवान नारी	गुणवती नारी

अशुद्ध	**शुद्ध**
आयी	आई
कहां	कहाँ
बृज	ब्रज
तैय्यार	तैयार
महत्व	महत्त्व
निरोग	नीरोग
रितु	ऋतु
प्रथक	पृथक
विषेष	विशेष
हथोड़ा	हथौड़ा
सौलह	सोलह
गौर(गोरा)	ग़ौर (ध्यान)
खुदा (खोदना)	ख़ुदा (ई”वर)
आ”ाीवाद	आ”ाीर्वाद
उज्जवल	उज्ज्वल

2. **शब्दगत अशुद्धियाँ** – शब्दों के व्यवहार में अनावश्यक प्रत्यय लगाने के कारण इस प्रकार की अशुद्धियाँ भाषा का सौन्दर्य नष्ट कर देती हैं ।

अशुद्ध	**शुद्ध**
सौजन्यता	सौजन्य
सावधनता	सावधानी
हैरानता	हैरानी
मधुरमता	मधुरता
सौदर्यता	सुन्दरता

renaissance

3. **शब्दार्थगत अशुद्धियाँ**– कई बार ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो प्रचलित है किन्तु अशुद्ध है जैसे –

वह **आटा** पिसवाने गया।	गेहूँ
दही जमा दो	दूध
मोहन गीत की **लड़िया** गुनगुना रहा था।	कड़ियाँ
आपको **बेशुमार** परेशानी हुई।	बेहद
शीघ्र **युद्ध** चलने की संभावना है।	छिड़ने
राजीव **गत** वर्ष रूस जाएगा।	आगामी
बेफिजूल बात मत करो।	फिजूल
उसने **अनेको** बातें बतलायीं।	अनेक
मालिन ने माला **गूँध** ली।	गूँथ
माँ ने आटा **गूँथा**	गूँधा
हत्यारे को **मृत्युदण्ड की सजा मिली**	मृत्युदण्ड मिला

4. **वाक्यगत अशुद्धियाँ**– व्याकरण संबंधी त्रुटि होने पर वाक्यगत अ"ुद्धियाँ होती है । कारक, वचन, लिंग, विशेषण आदि की त्रुटि इसके अन्तर्गत आती है।

1. **कारक संबंधी अशुद्धियाँ** –

अशुद्ध	शुद्ध
मैने खाना है।	मुझे खाना है।
मेरे को पुस्तक दो	मुझे पुस्तक दो।
शरीर पर कई अंग होते हैं।	शरीर के कई अंग होते है।
बच्चों से गुस्सा न करो	बच्चों पर गुस्सा न करो

विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ –

अशुद्ध	शुद्ध
रावण का दुराचरण खराब था	रावण का आचरण खराब था
मैं सप्रमाण सहित कहता हूँ।	मैं सप्रमाण कहती हूँ।
कृपया दो दिन का अवकाश देने की कृपा करे।	कृपया दो दिन का अवकाश दें/दो दिन का अवकाश देने की कृपा करें।
मात्र केवल छात्रों के लिए है।	केवल छात्रों के लिए है / मात्र छात्रों के लिए है।

लिंग संबंधी अशुद्धियाँ –

अशुद्ध	शुद्ध
पानी बरस रही थी	पानी बरस रहा था।
कमलेश ने दिल्ली दिखाया	कमलेश ने दिल्ली दिखाई।
आदरणीय माताजी को दीजिए	आदरणीया माताजी को दीजिए।
सरोजनी विद्वान स्त्री है।	सरोजनी विदुषी स्त्री है।

वचन संबंधी अशुद्धियाँ –

अशुद्ध	शुद्ध
उसे कितना आम चाहिए।	उसे कितने आम चाहिए।
वह अनेकों भाषाएँ जानता है।	वह अनेक भाषाएँ जानता है।
वृक्षों पर कोयल बोल रही है।	वृक्ष पर कोयल बोल रही है।
उसके अंग–अंग सजाये गये।	उसका अंग–अंग सजाया गया।

अन्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
उसकी तो तकदीर **टूट** गयी	उसकी तो तकदीर **फूट** गयी।
उसके सारे इरादों पर **पानी बह गयी**	पानी फिर गया।
रोगी की **दिशा** ठीक नही	दशा।
तमाम देशभर में बात फैल गयी	देशभर में बात फैल गयी।
बकरी को काटकर गाजर खिलाओ।	बकरी को गाजर काटकर खिलाओ
मुझे पचास **रूपया** चाहिए।	मुझे पचास रूपये चाहिए।

19. शैली

शैली – शैली का सामान्य अर्थ हैं तरीका या ढंग। किसी भी कार्य को करने का तरीका या ढंग प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग होता है, शैली को अंग्रेजी में स्टाईल कहा जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसकी सदैव यह इच्छा रहती हैं कि अपनी बात को दूसरों के समक्ष स्पष्ट और प्रभावी रूप में पेश करें। भाषा व्यवहार में वह अनेक तरीके अपनाता है। एक ही समसय में मनुष्य एक से अधिक शैलियों का प्रयोग कर सकता है।

महत्व – शैली का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है, या यह कह सकते हैं कि भाषा को शैली से पृथक करके नहीं देखा जा सकता, दोनों एक दूसरे से अभिन्न है। शैली हमारे व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण साधन मानी गई है, किसी भी पेशे से जुड़ा मनुष्य हो वह अपनी भाषा-शैली द्वारा ही सफलताओं की सीढ़ियों पर चढ़ता है। शैली द्वारा ही अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली व आकर्षक बनाया जा सकता हैं, शैली व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

विवरणात्मक शैली – विवरण का सामान्य अर्थ हैं ज्यों का त्यों प्रस्तुतीकरण। अर्थात् जैसा देखा वैसा ही व्यक्त किया गया। विवरणात्मक शैली में वक्ता की भूमिका तटस्थ रहती है, वह बिना किसी लाग-लपेट के अपनी बात दूसरों तक पहुँचाता है। अतः किसी भी घटना या विषयवस्तु का ज्यों का त्यों प्रस्तुतीकरण विवरण कहलाता है।
विवरण सामान्यतः दो रूपों में व्यक्त किया जाता है – प्रत्यक्ष कथन और अप्रत्यक्ष कथन।

प्रत्यक्ष कथन – इसमें भी वक्ता की भूमिका तटस्थ रहती हैं इस शैली में वक्ता जानता हैं कि कहे गए वाक्य किसने कहे है, अर्थात् वक्ता को बोलने वाले की स्थिति का पता रहता हैं, इन कथनों को उद्धरण चिन्हों में लिखा जाता है।
उदाहरण – ''सुभाषचन्द्र बोस के अनुसार तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा''।

अप्रत्यक्ष कथन – इस शैली में भी वक्ता तटस्थ तो रहता हैं किंतु वक्ता को बोलने वाले की जानकारी नहीं होती केवल व सुनी और देखी गई बात को ज्यों की त्यों प्रस्तुत करता है।

''मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार - आगामी चौबीस घंटों में जम्मू और कश्मीर में गरज के साथ बारिश होने की संभावनाएँ है।''

अतः विवरणात्मक शैली में -

1. वक्ता की भूमिका तटस्थ होती है।
2. सरल वाक्यों का प्रयोग होता है।
3. इसमें वक्ता के सूचक शब्द जैसे मैनें कहा - मेरे द्वारा आदि का प्रयोग नहीं किया जाता।
4. इस शैली में कल्पनाशीलता का अभाव होता है।
5. यह शैली तथ्यात्मक होती है।
6. यह सात्यसूचक घटनाओं पर आधारित होती है।
7. इस शैली का प्रयोग भूतकालिक घटनाओं में तथा कभी-कभी वर्तमान कालिक घटनाओं में भी किया जाता है।

मूल्यांकन शैली -

मूल्यांकन शैली का अर्थ है, मूल्य आंकना। देखना एक सामान्य क्रिया है, प्रत्येक मनुष्य हर वक्त कुछ न कुछ देखने की क्रिया करता है। जब यह देखना सामान्य न होकर विशिष्ट रूप में किया जाता हैं तो मूल्यांकन का जन्म होता है।

विशेषताएँ -

1. वैयक्तिकता होती है।
2. वक्ता उपस्थित होता है।
3. उदाहरण का महत्व
4. समानधर्मी वस्तुओं से तुलना
5. इसमें वक्ता स्वयं प्रश्न कर स्वयं ही समाधान ढूंढने का प्रयास करता है।
6. आलोचनात्मक
7. उद्देश्यपूर्ण निरीक्षण
8. यह शिक्षा और संस्कारों पर आधारित रहती है।
9. इस शैली में अंत में या निष्कर्षतः लिखकर मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाता है।
10. गुण-दोषों का कथन किया जाता है।

व्याख्यात्मक शैली -

व्याख्या का अर्थ हैं विशेष आख्या किसी भी कठिन या जटिल विषय वस्तु को समझाकर प्रस्तुत करना व्याख्या कहलाता है। व्याख्यात्मक शैली में वक्ता की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। वक्ता के सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

विशेषताएँ -

1. इसमें वक्ता महत्वपूर्ण होता है।
2. वक्ता के सूचक शब्दों का प्रयोग होता है।
3. उदाहरणों का महत्व होता है।
4. दृष्टांन्तों के माध्यम से बात का स्पष्ट किया जाता है।
5. भाषा शैली सरल एवं स्पष्ट होती है।
6. अस्पष्ट एवं कठिन शब्दावली का प्रयोग नहीं किया जाता।

विचारात्मक शैली -

मनुष्य में मस्तिष्क का संबंध विचारों से और हदय का संबंध भावों से होता है। इन दोनों में संतुलन की आवश्यकता होती है। किंतु कभी-कभी मनुष्य विचार प्रधान होता हैं तो कभी भाव प्रधान। किसी विषय पर बिंदु पर अपने विचारों का

प्रस्तुतीकरण विचारात्मक शैली का उदाहरण हें जिसमें वक्ता अपने विचारों को क्रमबद्धता के आधार पर प्रस्तुत करता है। वह विभिन्न तथ्यों के माध्यम से अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाता है।

विशेषताएँ –

1. वैचारिकता की प्रधानता
2. क्रमबद्धता के आधार पर विचारों का प्रस्तुतीकरण
3. वक्ता की भूमिका महत्वपूर्ण
4. भाषा की स्पष्टता एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

शैली के अन्य प्रकार –

1. अति औपचारिक शैली
2. अनौपचारिक शैली
3. औपचारिक शैली
4. घनिष्ठ शैली
5. वैमरिकि शैली
6. एकालाप
7. संलाप

20. व्यावसायिक पत्र लेखन

पत्र लेखन एक कला हैं जो व्यक्ति को निरन्तर अभ्यास के द्वारा हासिल होती है। पत्र लिखने का कार्य व्यक्ति के जीवन में अनेक बार आता है। हमारे दैनिक जीवन के कार्य जिनमें सरकारी व्यावसायिक आदि होते है उनमें तो बिना पत्र का सहारा लिए कार्य नहीं किया जा सकता। अति व्यस्तता वाले इस समाज में पत्र लेखन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होते जा रहे है। ये दस्तावेज का कार्य करते हैं क्योंकि इनका रूप लिखित होता है।

पत्र लिखते समय अनेक सावधानी रखनी चाहिए। जिनमें निम्न है –

1. पत्र स्पष्ट शब्दों में अंकित हो।
2. पत्र का प्रारूप संक्षिप्त हो।
3. पत्रों की भाषा नपी-तुली व सधी हुई हो।
4. पत्र में प्रेषक एवं प्रेषित का नाम, पता स्पष्ट उल्लेखित हो।
5. पत्र का विषय स्पष्ट हो।
6. पत्र में स्थान एवं दिनांक का महत्व होता है।
7. पत्र औपचारिक शैली में लिखे गए हो।
8. व्यावसायिक पत्र में एक विषय के लिए एक ही पत्र लिखा जाना चाहिए।

व्यावसायिक पत्र उन्हें कहते है जो व्यापार, व्यवसाय या नौकरी से संबंधित कार्यों में प्रयोग में लाए जाते हो। जब दुकानदार को या किसी व्यवसायी को कहीं अन्य स्थान से माल मंगवाना हो, वापस करना हो, ऑर्डर देना हो या अन्य किसी प्रकार का आवश्यक कार्य हो ऐसे समय में व्यवसायिक पत्र लिखे जाते है। जो पूरी तरह औपचारिक होते है। इन पत्रों में किसी प्रकार की भावना, अनुभूति संवेदना का स्थान नहीं होता इसलिए विषय की मूल बात को खत्म कर विषय समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

व्यावसायिक पत्र का नमूना

प्रकाशक से पुस्तकें मंगवाने हेतु व्यावसायिक पत्र

दिनांक : 02/12/2007

प्रेषक
के. भूषण
302, खजूरी बाजार, इन्दौर

प्रेषित
प्रबंधक,
राज पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.
3, दरियागंज, नई दिल्ली

विषय : पुस्तके खरीदने बाबद्।

महोदय, / मान्यवर,

उपरोक्त विषय से संबंधित यह पत्र आपको वाणिज्य विषय की बी.कॉम. प्रथम वर्ष की 200 पुस्तकें तथा द्वितीय वर्ष की 200 पुस्तके राजकमल प्रकाशन की अतिशीघ्र भेजे। यह पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा प्राप्त कर ली जाएगी। आपको पुस्तकों की अग्रिम राशि रूपये 20,000/- ड्राफ्ट द्वारा भेज रहे है। सभी पुस्तकें नवीन संस्करण की होनी चाहिए। इस ऑर्डर को आप जल्द से जल्द पूरा करवाएँ।

संलग्न -
पुस्तकों की सूची

शुभेच्छु/ भवदीय
प्रबंधक
के. भूषण
इन्दौर

renaissance